आचार्य रजनीश

1974
स्टार का १०वाँ वर्ष

स्टार के नये सेट में

उर्वशी तथा अन्य शृंगारिक कविताएं : (दिनकर)
तलखियां : (साहिर लुध्यानवी)
याद रही बातें : (अक्षयकुमार जैन)
आग की लकीर : (अमृता प्रीतम)
चाकर गाथा : (विमल मित्र)
घुन लगी बस्तियां : (जयवन्त दलवी)
कलंक : (शिवकुमार जोशी)
असमर्थ की यात्रा : (त्रि० गोपीचन्द)
कदम-कदम पर खतरा : (गुप्तदूत)
तूफान : (राजवंश)
दीन दुनिया : (गुरुदत्त)
लाडली : (समीर)
अभिलाषा : (लोकदर्शी)
हँसना मना है : (आचार्य रजनीश)
विवाह और यौन-समस्याए : (डॉ० वाबे)
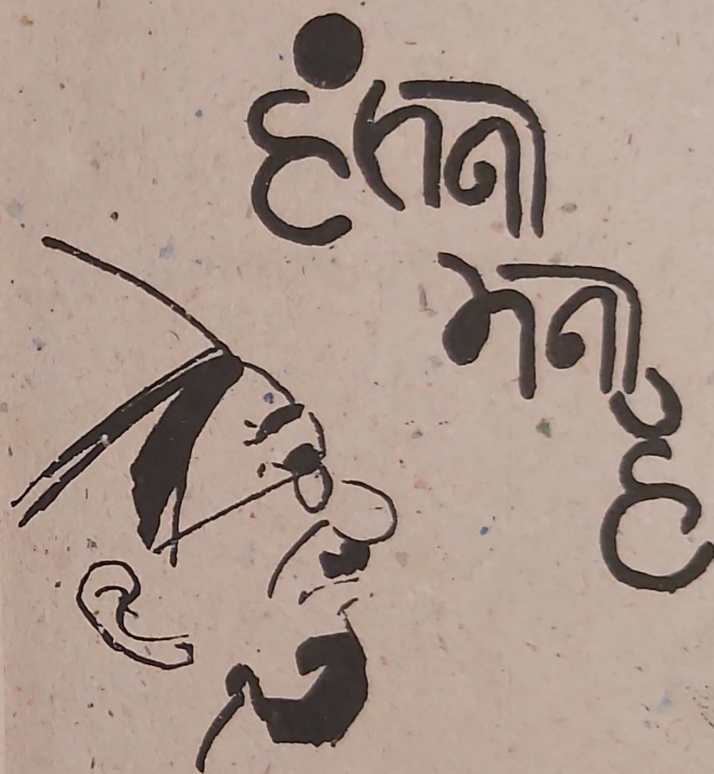
आचार्य रजनीश

स्टार पॉकेट सीरीज

SH : 293

प्रथम संस्करण : १९७४
प्रकाशक :
स्टार पब्लिकेशंज (प्रा०) लि०
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००१
मूल्य : तीन रुपये (Rs. 3.00)
मुद्रक प्रभात आफसेट प्रेस, दरिया गंज दिल्ली-६

HANSANA MANA HAI : (Acharya Rajneesh)

मुल्ला और हम

मनुष्य जीवन को यदि गौर से देखें तो वह एक धूप-छांव के खेल
ज्यादा नहीं है ।

जीवन में अनेक-अनेक रंग उभरते हैं और सब न जाने कहाँ
बिखर जाते हैं ।

लगता है जीवन एक स्वप्न है,
एक खेल है
एक लीला है
एक रहस्य-कथा है
एक बेबूझ कहानी है

यहां सुख दुख में बदल जाता है
पाप पुण्य में और पुण्य पाप में
दिन रात में बदल जाता है
जन्म मृत्यु में
और सफलताएं असफलताओं में ।
जीवन विकसित होता है शून्य स्रोत से
और फिर विलीन हो जाता है शून्य में ।

जीवन की इस गति का, नियति का, लीला का, खेल का, स्वप्निल प्रवाह का बोध व्यक्ति को एक हल्केपन से, एक तरलता से और एक अरूप रहस्य से भर जाता है।

फिर इस खेल में खेलना होता है,
बहना होता है।
सहज जीना होता है।

न कोई आधार रह जाता—चिन्ता के लिए
न कोई कारण रह जाता—गम्भीरता के लिए
न कोई सहारा रह जाता—पकड़ने के लिए
न कोई सीमा रह जाती—बंधने के लिए
न कोई मित्र रह जाता, न कोई दुश्मन—न राग के लिए, न द्वेष के लिए।

इस माया-बोध, लीला-बोध और रहस्य-बोध से
जनमता है सर्व-स्वीकार—तथाता
तब चेहरे पर खिलती है मुस्कराहट
और मन-मयूर नाचता है—जीवन की फुहार में
हृदय की वीणा के तार झंकृत होते हैं—जीवन की निर्भारता से

तब व्यक्ति गुजरता है जीवन से
लेकिन हल्का-फुल्का
नाचता-गाता
जीवन को उसके विविध रंगों में निरखता।

इस हल्केपन में ही भीतर पता चलता उस चेतना का जो है
निर्विकार
साक्षी

अस्पर्शित
निर्लेप
अक्षय
अमृत।

लेकिन इस तक पहुंचने का क्या है रास्ता ?
क्या होगी सीढ़ी ?
क्या होगा दृष्टिकोण ?

तो देखें जीवन को
बस देखें
उसके उतरते-चढ़ते रंगों में
आती-जाती बदलियों में
बनते-बिखरते धूप-छाँह में
एक चल-चित्र की तरह
जिसमें हैं अरबों पात्र
एक से एक अनूठे
और विचित्र
और बेबूझ

हमारा मुल्ला नसरुद्दीन अपने में सब कुछ समाये हुए है।
सब चेहरे उसके
सब विचित्रताएं उसकी
सब राग-द्वेष, सुख-दुख, अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म उसका।
लेकिन, इस बहुरंगी, बहु-आयामी मुल्ला की लीलाओं को पढ़ते-पढ़ते आप पायेंगे कि

क्या आप जीवन का नाटक ही नहीं देख रहे हैं !

अपना

दूसरों का

सब का ?

मुल्ला की कहानी हम सब की ही कहानी है।

मुल्ला के साथ हम हँसेंगे, रोयेंगे, क्रोधित होंगे, निराश होंगे, आश्चर्य में डूबेंगे—जीवन में बहेंगे।

लेकिन, यह सब हमें जीवन के स्वप्न-बोध पर छोड़ जाएगा।

बह जायेंगी हमारी परतें, हमारे चेहरे, हमारे मुखौटे, हमारा मान-अभिमान।

और भीतर छूट जाएगा—एक हल्कापन, एक निर्विकारता, एक ताजगी।

और इस जीवन-बोध से भीतर अनायास ही निर्मित हो जाता है एक केन्द्र

साक्षी का—चेतना का—'स्व' सत्ता का।

भीतर जन्म होता है उसका जो रंगों का, तरंगों का, बदलियों का, धूप-छाँह का, परिवर्तनों का, प्रवाहों का अतिक्रमण कर जाता है।

आशा है कि मुल्ला नसरुद्दीन के इन लतीफों में आप झांक पायेंगे अपनी ही तस्वीर

देख पायेंगे अपने चेहरों के विविध रंग

और मन की लीलाएं।

यह मुल्ला निर्मित हुआ है भगवान् श्री रजनीश की विनोदप्रिय-रहस्यमयी करुणा से।

मुल्ला को बनाया है उन्होंने एक दर्पण।

जिसमें श्रोताओं का अपना प्रतिबिम्ब ही बार-बार वापिस लौटता है।

ये लतीफे कहे गये हैं श्रोताओं को जीवन का रहस्य हल्के-फुल्के,

कड़वे-तीखे-चटपटे ढंग से समझाने के लिए।

लेकिन, इन मुस्कराहटों के पीछे एक पीड़ा है, एक करुणा है, एक कसक है।

कि क्या हम अपने प्रति जाग सकते हैं ?

क्या हम स्वयं पर हँस सकते हैं ?

क्या हम अपनी ही हजार-हजार छिपी परतों से परिचित हो सकते हैं ?

मुल्ला के माध्यम से ?

तब शायद आत्म-क्रांति का बीज भीतर रोपित हो जाय।

अनजाने ही

मौन ही

अदृश्य ही

—स्वामी योग चिन्मय

ए ६, वुडलेण्ड्स
पैडर रोड, बंबई-२६

मुल्ला नसरुद्दीन तैरना सीखने के लिए तालाब में उतरा परन्तु भाग्य की बात, पैर रपट पड़ा और वह दो-तीन गोते खा गया। बस निकल कर वह बोला, "कसम भगवान् की! अब जब तक तैरना पूरी तरह न सीख लूं तब तक तालाब की दिशा में पैर भी न रखूंगा।"

निश्चय ही अनेक जन्म हो गये लेकिन मुल्ला नसरुद्दीन अभी तक तैरना नहीं सीख पाया है।

क्योंकि, तैरना सीखने के लिए बिना तैरना जाने ही तालाब में उतरने का साहस आवश्यक है।

और यही धर्म के संबंध में सत्य है।

यही ध्यान के संबंध में।

और यही संन्यास के।

○ ○
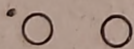
मुल्ला नसरुद्दीन परंपरा–भक्त था। जाड़े में एक अजीब कट का कोट पहने देख उसके एक मित्र ने पूछा "नसरुद्दीन, यह कोट किस जमाने का पहन् रखा है?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया, "इसके पहनने की हमारे घर में सदा से परंपरा चली आ रही है। मेरे बाबा ने इसे पहना। मेरे पिताजी ने

इसे पहना। अब मैं इसे पहन रहा हूं।"

"और तुमने दाढ़ी क्यों बढ़ा रखी है?"

"दाढ़ी बढ़ाने की भी हमारे यहां परंपरा है। मेरे बाबा की छः इंच की दाढ़ी थी। मेरे पिताजी की भी छः इंच की दाढ़ी थी।"

"और नसरुद्दीन, तुम अब तक अविवाहित क्यों हो? क्या वह भी तुम्हारे परिवार की कोई पुरानी परंपरा है?"

"निश्चय ही," जोश में आकर नसरुद्दीन बोला, "मेरे बाबा जन्म भर अविवाहित रहे, फिर मेरे पिताजी भी। मैं तो केवल परंपरा का पालन कर रहा हूं।"

○ ○
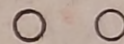
एक बार मुल्ला नसरुदीन से उसके एक मित्र ने मजाक में कहा: "नसरुद्दीन, तुम्हारी पत्नी रात में अपने प्रेमी के साथ, तुम्हारे ही आम के बगीचे में प्रेमालाप करती है।"

मुल्ला गंभीर हो गया। फिर बोला: "सच, कब आती है?"

मित्र ने कहा: "यही करीब रात के एक बजे।"

उस दिन नसरुद्दीन का समय बड़ी बेचैनी में कटा, रात का खाना भी न खाया, और रात के दस बजते-बजते वह अपनी बंदूक लेकर बगीचे में जाकर एक पेड़ की आड़ में बैठ गया। सोच रखा था उसने कि आज दोनों को एक साथ ही खत्म कर दूंगा।

समय बीतता गया, पर न ही उसकी पत्नी आई और न ही उसका प्रेमी आया।

पर जब रात के सन्नाटे में एक का घंटा बजा, तब उसे ख्याल आया कि वह तो अभी तक अकेला, कंवारा ही है।

पर मुल्ला नसरुद्दीन पर हँसना नहीं, क्योंकि ऐसी ही हालत में मैं अधिक लोगों को पाता हूं।

○ ○
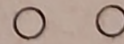
प्रेमिका : "मुल्ला, तुम कहते हो कि तुम मेरे लिए मौत का सामना कर सकते हो। अच्छा, जरा इस सांड के सामने ही खड़े हो जाओ ?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने सांड को गौर से देखा और फिर कहा : "मैं मौत का सामना निश्चित ही कर सकता हूं। लेकिन यह सांड अभी मरा कहां है ?"

○ ○
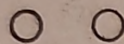
"मेरे मुअक्किल मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी भूख शांत करने के लिए केवल पाँच रुपये चुराये," वकील ने मुल्ला का बचाव करते हुए कहा, "इसका मेरे पास सबूत है। पास ही ५०० रुपयों से भरी हुई थैली पड़ी थी जिसे उसने छुआ भी नहीं।"

इस दलील का अदालत पर गहरा प्रभाव पड़ा।

लेकिन सिसकियों की आवाज सुनकर वकील मुड़ा। मुल्ला ज़ार-ज़ार रो रहा था।

अदालत मुल्ला के पश्चात्ताप से और भी प्रभावित हुई।

वकील ने पूछा : "क्यों, नसरुद्दीन, तुम्हें बहुत पछतावा हो रहा है न ?"

"जी हां !" नसरुद्दीन ने कहा, "मुझे बड़ा पछतावा है कि वह थैली मेरी निगाह से कैसे चूक गई !"

○ ○
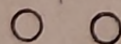
अचेतन मन बड़े खेल खेलता है।

मुल्ला नसरुद्दीन अपनी मंगेतर के साथ गाँव लौट रहा था। उसकी एक बांह में बाल्टी, एक हाथ में छड़ी और दूसरी बांह के नीचे एक मुर्गी और दूसरे हाथ में एक बकरी की रस्सी थी।

"नसरुद्दीन, मुझे तुम्हारे साथ चलने में बड़ा डर लग रहा है," मंगेतर बोली : "कहीं तुम छेड़छाड़ न करने लगो ?"

"इन सब चीजों से लदा-फ़दा होने पर वह कैसे संभव है ?" नसरुद्दीन ने कहा।

"क्यों ? संभव क्यों नहीं है ?" मंगेतर ने चांद की ओर देखकर कहा : "तुम छड़ी को जमीन में गाड़ कर, बकरी को उसमें बांधकर, मुर्गी को बाल्टी के नीचे जो रख सकते हो ?"

○ ○
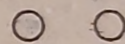
मुल्ला नसरुद्दीन ने काफी दिन प्रेमाराधना करने के बाद एक दिन अपनी प्रेयसी से पूछा : "एक शब्द में मैं संसार का सबसे सुखी आदमी बन जाऊंगा। क्या तुम मुझसे विवाह करोगी ?"

"नहीं।" प्रेयसी ने सब भांति 'हां' भरते हुए कहा।

और मुल्ला नसरुद्दीन खुशी में फूलते हुए बोला : "भगवान् का धन्यवाद ! यही वह शब्द था।"

○ ○
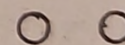
"मुझे बहुत डर लग रहा है, मुल्ला !" मरीज ने कहा : "यह मेरी पहली ही बीमारी है।"

"व्यर्थ ही डर रहे हैं महाशय !" मुल्ला नसरुद्दीन बोला। "मुझे देखिये, मैं तो कहीं नहीं डर रहा, मेरे भी तो आप पहले ही मरीज हैं।"

○ ○
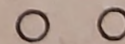
मुल्ला नसरुद्दीन बेकार था। कोई और उपाय न देख उसने नौकरी के लिए एक सर्कस का द्वार खटखटाया। सर्कस के मालिक ने कहा, "नसरुद्दीन, तुम्हें बस इतना ही करना है कि शेर के पिंजरे में घुसकर उसे गोश्त का टुकड़ा दो और चले आओ। रहस्य इतना ही है कि तुम शेर को यह विश्वास दिला दो कि तुम उससे डरते नहीं हो।"

"मुझे यह नौकरी नहीं करनी," मुल्ला बोला, "मैं इतना धोखेबाज नहीं हो सकता हूं।"

○ ○
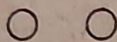
मैं भूल में हूं, क्या ऐसा कभी स्मरण आता है ?

परिस्थिति ही ऐसी होती है कि मुझे भूल करनी पड़ती है।

और दोष मेरा नहीं, परिस्थिति का ही होता है।

मुल्ला नसरुद्दीन चढ़ा एक बस पर।

शराब में धुत्।

और एक प्रौढ़ सफेद बालों वाली स्त्री के बगल में बैठ गया।

स्त्री ने देखी उसकी दयनीय दशा तो करुणा भरे स्वर में कहा : "नसरुद्दीन, तुम्हें पता नहीं, लेकिन तुम इस समय सीधे और अपने ही ही कारण नर्क जा रहे हो।"

मुल्ला यह सुन कर कूद कर खड़ा हो गया और ड्राईवर से बोला: "रोको भई, रोको। मैं गलत नंबर की बस पर बैठ गया हूं।"

○ ○
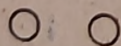
"मुल्ला, मैं सारे वक्त परेशान रहता हूं," मरीज ने अपना हाल सुनाते हुए मुल्ला नसरुद्दीन से कहा, "मुझे कई बार दौरा पड़ता है और मैं खुद को मार डालने की कोशिश करने लगता हूं...पर जाने कैसे हर बार बच जाता हूं!"

"इतनी सी बात के लिए आपको चिंतित होने की जरुरत नहीं है," नसरुद्दीन ने गंभीरता से कहा, "आपके पूर्ण सफल होने की जिम्मेदारी मैं अपने सिर लेता हूं।"

○ ○
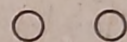
आप जीवन से सकुशल वापिस लौट जाय तो बड़ी ही असाधारण घटना है।

होनी तो चाहिए साधारण और सहज—लेकिन होती नहीं है।

क्योंकि, जिसे हमने सहज जाना और माना है वह अत्यंत असहज है।

एक बार किसी प्राचीन भग्नावशेष में मुल्ला नसरुद्दीन को रात्रि बितानी पड़ी। आंधी जोरों पर थी और चारों ओर घना अंधकार छाया था और निर्जनता वातावरण को और भी भयानक बना रही थी। एक कमरे में बिस्तरा बिछाते हुए मुल्ला ने प्रेत जैसे दीखते दरबान से पूछा "क्या इस कमरे में कभी कोई असाधारण घटना हुई है ?"

"पिछले चालीस वर्षों से तो नहीं हुई है," दरबान ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

इतमीनान की सांस छोड़ते हुए मुल्ला ने उत्सुकतावश पूछा, "चालीस वर्ष पहले क्या हुआ था ?"

दरबान की आंखें अंधेरे में चमकने लगीं। उसने कहा : "चालीस वर्ष पहले एक यात्री इस कमरे में रात भर सोया था और सुबह सकुशल वापिस चला गया था।"

○ ○
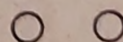
मुल्ला नसरुद्दीन लोहार की दुकान पर जा कर बोला : "मुझे एक बहुत बड़ी बाल्टी चाहिए जिसमें बहुत सा पानी आ जाये।"

लोहार ने मुल्ला को अपनी सबसे बड़ी बाल्टी निकाल कर दिखाई। मुल्ला ने उसे ठीक से जांचा-परखा। फिर भाव का मोल-तोल किया और अंत में कहा : "अच्छा ठीक है। कृपया इसे मेरे घर पहुंचा दीजिये।"

और इतना कहकर मुल्ला दरवाजे की ओर चल दिया। लेकिन फिर कुछ सोच कर वापिस आया और बोला : "और हां, जरा जल्दी भिजवाना। मेरे मकान में आग लग गई है।"

मैं पूछता हूं कि आपके मकान में आग लगे तो आप मुल्ला नसरुद्दीन ने जो किया वही करियेगा या आपके विचार कुछ भिन्न हैं ?

○ ○
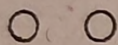
मुल्ला नसरुद्दीन लंगड़ा कर चल रहा था और पैरों की पीड़ा से उसकी आंखों में आंसू निकल आये थे। उसकी पत्नी ने कहा : "मुल्ला, तुम रो क्यों रहे हो ?" मुल्ला बोला : "मेरे जूते पैरों को बहुत तकलीफ पहुंचा रहे हैं।"

"पत्नी ने मुल्ला के पैरों की ओर देखा तो कहा : "अरे, तुमने तो गलत पैरों में जूते पहन रखे हैं।"

नसरुद्दीन ने नाराज हो कर कहा : "लेकिन मेरे पास कोई और पैर हैं ही कहां ?"

○ ○
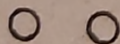
कल्पना तो कोई भी बुरी नहीं है, पर वह बात कल्पना ही है, इतना ही तो काफी है, और बुरा होना आवश्यक भी कहां है ?

"बस कल्पना करो" बोला मुल्ला नसरुद्दीन अपनी पत्नी से, "कि सोना बीस रुपया तोला, गेहूं दो रुपये मन, घी एक रुपये का दो सेर, भर पेट खाना छः पैसे में, चार कमरोंवाले फ्लैट का किराया पन्द्रह रुपये माहवार, बच्चों की पढ़ाई मुफ्त। मोटर पांच सौ रुपये में……"

"कहां ?" पत्नी ने आनंदित हो पूछा।

मुल्ला यह प्रश्न सुन उदास हो गया और बोला : "अरे, कहीं भी नहीं, लेकिन यह कल्पना क्या बुरी है ?"

○ ○
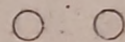
मैं जब भी आपको धर्म से प्रभावित देखता हूं तो मुल्ला नसरुद्दीन की याद बरबस ही आ जाती है।

मुल्ला नसरुद्दीन की कंजूसी से परेशान हो उसकी पत्नी उसे एक सभा में ले गई जहां कि दान-पुण्य की बड़ी बड़ाई होने को थी। मुल्ला सभा में इतना प्रभावित हुआ कि पत्नी को भी भरोसा न आया। लौटते समय मुल्ला ने उससे कहा : "मैं आज की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ हूं। दान-पुण्य से श्रेष्ठ जीवन में और कुछ भी नहीं है और मैं कल से ही दान मांगने के महत् कार्य में अपना सारा जीवन लगाने जा रहा हूं।"

○ ○
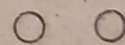
शरीर बदलता है उम्र से।
मन नहीं।
शक्ति होती है क्षीण।
पर वासना नहीं।

मुल्ला नसरुद्दीन की दाढ़ी में सफेद बाल सिर उठाने लगे थे।

एक रात्रि वेश्यागृह की ओर जाते मुल्ला से किसी पुराने प्रतिद्वन्द्वी ने कहा : "मुल्ला, अब तो तुम्हारे बाल भी सफेद हो चले।"

"घबराते क्यों हो ?" नसरुद्दीन बोला : "दिल तो वैसा ही काला है।"

○ ○
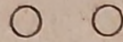
मुल्ला नसरुद्दीन अपने बेटे को कृपाण से लड़ने की तालीम दे रहा था कि एक दोस्त ने आकर कहा : "अरे नसरुद्दीन ! यह तालीम अकेली क्या करेगी ? किसी तगड़े बड़े आदमी से पाला पड़ गया तब यह दुबला-पतला लड़का क्या करेगा ?"

"कच्चा समझते हो मुझे ?" नसरुद्दीन ने कहा, "साथ-साथ लड़के को तेजी से भागकर छुप जाने की तालीम भी तो दे रहा हूँ।"

○ ○
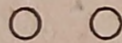
जिन्दगी में शुभ-अशुभ अंधेरे और प्रकाश की तरह कटे-बंटे नहीं हैं।

कम अशुभ और ज्यादा अशुभ या कम शुभ और ज्यादा शुभ के बीच ही सदा चुनाव है।

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी उसके घावों की मरहम-पट्टी करती हुई पूछ रही थी : "तुम्हारे कहने का क्या अर्थ है कि तुमने उस आदमी को तुम्हारी ही छड़ी से तुम्हें पीटने दिया ?"

"और क्या करता ?" कराहता हुआ बोला नसरुद्दीन, "क्योंकि खुद उसकी छड़ी और भी मोटी थी।"

○ ○
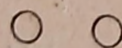
क्या पागल होने में आपके अभी भी देर है ?

सोचें जरा।

या कि हो ही चुके हैं ?

जल्दी नहीं—थोड़े धैर्य से स्वयं पर पुनः सोचें।

आधी रात। मुल्ला नसरुद्दीन के पड़ोसी ने आखिर हारमोनियम की बेसुरी आवाज सुनते-सुनते तंग आकर खिड़की से सिर बाहर निकाल चिल्लाकर कहा : "नसरुद्दीन, अगर तुमने अपनी बेहूदी हरकत बन्द नहीं की तो मैं पागल हुए बिना नहीं रहूँगा।"

मुल्ला खिलखिलाकर हँसने लगा और बोला : "प्यारे, अब तो बहुत देर हो चुकी है। मुझे हारमोनियम बजाना बन्द किये एक घंटे से ऊपर हो चुका है।"

○ ○
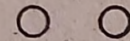
तथ्य कहाँ है ?

बस सब कुछ व्याख्यायें ही हैं।

और सबकी अपनी-अपनी व्याख्यायें हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन घबराया हुआ पुलिस-थाने पहुँचा और कहने लगा : "साहब, मेरे मित्र के साथ भयंकर दुर्घटना हो गई है।"

"कैसी दुर्घटना ?" पुलिस अधिकारी ने सजग होते हुए पूछा। मुल्ला बोला : "वह आज मेरी पत्नी को भगाकर ले गया है।"

○ ○
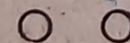
सभी कुछ सापेक्ष है।

निरपेक्ष कुछ भी नहीं।

मुल्ला नसरुद्दीन के नगर का नामी कजूंस मर गया था। उसके घर पर सैंकड़ों की भीड़ इकट्ठी हो गई, शोक मनाने के लिए नहीं,

वरन् यह निश्चयपूर्वक जानने के लिए कि वह मर गया है। जब उसका जनाजा उठने लगा तब भी किसी ने रिवाज के तौर पर भी उसकी प्रशंसा में एक भी शब्द न कहा। आखिर कुछ लोगों ने मुल्ला से अनुरोध किया और कहा : "नसरुद्दीन, तुम तो इनके परिवार को भलीभांति जानते रहे हो और इन्हें भी और लोगों की अपेक्षा अधिक जानते रहे हो। शायद तुम इनके संबंध में कोई अच्छी बात कह सको।"

मुल्ला मान गया और बहुत सोच-विचार के बाद बोला : "यह मृत व्यक्ति धोखेबाज, दुष्ट, किसी का भला न करनेवाला और महा कंजूस था। लेकिन इसके सात भाई अभी और हैं और उनकी तुलना में यह देवता था।"

○ ○
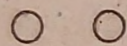
कब्रिस्तान का एक कर्मचारी नशा किया करता था। एक दिन उसने नशे में एक कब्र खोदनी शुरू की। खोदता गया, खोदता गया और नशा टूटा तो उसे पता चला कि शाम हो गई है और कब्र इतनी गहरी खुद गई है कि उस का उसमें से निकलना बड़ा कठिन हो गया है।

उसने शोर मचाया लेकिन कोई सुनने वाला न था। फिर कुछ-कुछ अंधेरा भी हो चला और सर्दी भी बढ़ गई। तभी मुल्ला नसरुद्दीन वहां से गुजरा। कर्मचारी ने गिड़गिड़ा कर कहा : "मुल्ला, खुदा के वास्ते मुझे बाहर निकालो। मैं ठंड से मरा जा रहा हूं।"

मुल्ला ने झांक कर कब्र में देखा और गंभीरता से कहा : "ठंड तो लगेगी ही भाई ! तुम पर मिट्टी डालना भी भूल गये हैं।"

○ ○
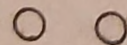
सत्य स्वयं सिद्ध है।

स्व-प्रकाशवान् है।

उसे किसी और प्रकाश या किसी और प्रमाण या किसी और गवाही की कोई भी आवश्यकता नहीं है।

मुल्ला नसरुद्दीन सदा ही देर से सो कर उठता था। एक दिन उसकी नींद कुछ जल्दी खुल गई, तो उसने नौकर को पुकार कर कहा : "अरे महमूद, दरवाजा खोल कर देख, सूरज निकला कि नहीं ?"

सर्दियों का था मौसम। नौकर बाहर जाकर शीघ्र लौट आया और बोला : "मुल्ला, बाहर तो बड़ा अंधेरा है।"

नसरुद्दीन को बड़ा क्रोध आया और वह बिगड़ कर बोला : "अरे मूर्ख अक्ल से काम ले। यदि अंधेरा है तो दिया जला कर क्यों नहीं देख लेता ?"

○ ○
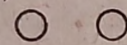
"मुल्ला, कोई ऐसा तरीका बताइये, जिससे मैं कम से कम सौ बरस तक तो जीवित रह सकूं," पूछा एक मरीज ने मुल्ला नसरुद्दीन से।

मुल्ला ने उल्टा ही सवाल किया : "क्या तुम शराब पीते हो ?"

"जी नहीं।"

"सिगरेट ?"

"नहीं।"

"क्या किसी सुन्दरी से प्रेम करते हो ?"

"नहीं।"

"या करना चाहते हो ?"

"नहीं।"

तब मुल्ला नसरुद्दीन झल्ला कर बोला : "तो फिर तुम सौ साल तक जिंदा किसलिए रहना चाहते हो ?"

○ ○
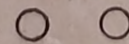
मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी का नाटक में पार्ट था। मुल्ला भी नाटक देखने गया था। नाटक निपटने के उपरान्त वह तुरन्त ही हाल से उठकर अपनी पत्नी के पास पहुँचा और बोला : "क्या तुमने सच-मुच ही उस आदमी को चूमा था ?

पत्नी मुल्ला को छेड़ने के ख्याल से बोली : "हाँ, मुल्ला, सचमुच।"

मुल्ला को बड़ा दुख और आघात पहुँचा। लेकिन फिर वह स्वयं को सम्हाल कर बोला : "और उस आदमी को बुरा नहीं लगा ?"

○ ○
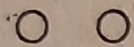
जीवन किसलिए है ?

किसी भांति बचा-बचा कर रखने के लिए ?

मुल्ला नसरुद्दीन एक दिन कह रहा था काफी हाउस में : "जी हाँ, जब मैं अपने गधे पर चढ़ा हुआ दूर जंगल में जा निकला तो कुछ डाकुओं ने मुझे आ घेरा और मेरे पास के सभी रुपये, घड़ी और गधा तक छीन कर चंपत हो गये।"

"किन्तु मेरा तो ख्याल था कि तुम्हारे पास पिस्तौल भी थी, नसरुद्दीन !" एक मित्र ने पूछा।

"थी। निश्चित थी।" नसरुद्दीन बोला : "लेकिन उस पर उन लोगों की नजर न पड़ सकी।"

○ ○
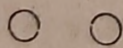
मुल्ला नसरुद्दीन की बैठक में लगी तख्ती को पढ़ कर एक मरीज बोला : "मुल्ला, यहां कहा गया है कि 'यदि तुम सिगरेट न लोगे, शराब न पिओगे और स्त्रियों के पीछे न भागोगे, तो तुम १५० वर्ष तक जी सकते हो।' लेकिन क्या यह सच है ?"

"कह नहीं सकता," नसरुद्दीन ने कहा, "क्योंकि आज तक इसका प्रयत्न किसी ने भी नहीं किया है।"

○ ○
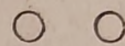
कौन हैं आप ?

कहां से आये हैं ?

कहां जा रहे हैं ?

क्यों जा रहे हैं ?

उत्तर तो नहीं है न ?

और फिर भी आप पागल नहीं हैं ?

मुल्ला नसरुद्दीन अपने विद्यार्थियों को पढ़ा कर पाठशाला के बाहर निकल रहा था। एक विद्यार्थी ने देखा कि मुल्ला अपनी पगड़ी उल्टी लगाये हुए है। उसने इशारे से बताना चाहा, लेकिन मुल्ला ऐसे इशारों से समझने वालों में से तो नहीं था। वह अपनी धुन में ही बाहर सड़क पर निकल गया। अब वह विद्यार्थी पीछे भागा और मुल्ला के पास आकर बोला : "गुरुदेव, क्षमा करिये, आपकी पगड़ी का अगला भाग पीछे की ओर लगा है।

"नादान लड़के, क्या बेकार की बात करता है।" नसरुद्दीन ने कहा : "तुझे मालूम भी है कि मैं किस दिशा में जाने वाला हूं ?"

○ ○
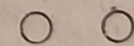
बीमारी से बचना तो आसान है, लेकिन चिकित्सा से बचना कठिन।

मुल्ला नसरुद्दीन के पास एक मानसिक रोगी लाया गया था जो अपनी एक अंगुली हमेशा बायें कान में डाले रखता था। यही उसकी बीमारी थी। उसका विश्वास था कि एक मक्खी उसके कान में घुस

गई है। मुल्ला ने कई उपाय किये, लेकिन रोगी का वहम न मिटा। अंत में उसने रोगी को आंख बंद करके लिटा दिया और बाद में उसे जगा कर एक मरी हुई मक्खी बता कर समझा दिया कि उसके कान से मक्खी निकाल दी गई है। रोगी अति प्रसन्न हुआ और रोगी के परिवार वालों ने दुआओं के ढेर लगा दिये नसरुद्दीन पर। लेकिन रोगी को विदा देते समय मुल्ला ने कहा कि "मक्खी अभी तो निकल गई, लेकिन कान से अंगुली अलग मत करना, नहीं तो मक्खी फिर घुस सकती है।"

और वह रोगी अभी तक पहले से ज्यादा सतर्कता से और एक कान की जगह दोनों ही कानों में अंगुलियां डाले घूमता रहता है।

○ ○
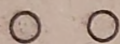
जीवन गणित नहीं है।
और वहां दो और दो सदा चार नहीं होते हैं।
मृत्यु तो नियमबद्ध है।
पर जीवन अनियम में ही जीता है।
या कहें कि वही उसका नियम है।

मुल्ला नसरुद्दीन को शैतान विद्यार्थियों को अनुशासित करने में बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। उसने विद्यार्थियों को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे कोई भी बात बोलने के पहले मन-ही-मन में कम-से-कम सौ तक की गिनती गिन लेंगे। इससे कक्षा में बड़ा शांति स्थापित होती प्रतीत हुई।

पर दूसरे ही दिन जब मुल्ला धर्म की शिक्षा दे रहा था तब उसने देखा कि पूरी कक्षा के विद्यार्थी अचानक उठ खड़े हुए और ९८-९९-१०० गिनते हुए बोले : "मुल्ला आप के कोट में आग लग गई है।"

○ ○
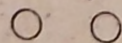
नगर सभागृह में बड़ी भीड़ थी। एक बड़े राजनैतिक नेता का भाषण था। भाषण का विषय था : "संसार की तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न समस्या।"

मुल्ला नसरुद्दीन सभा का अध्यक्ष था।

नेता ने समझाया : "आपको ज्ञात होना चाहिए कि संसार में किसी न किसी स्थान पर एक स्त्री हर मिनिट एक बच्चा उत्पन्न कर रही है। अब सोचो हमें क्या करना चाहिए!"

जनता तो चुप ही रही। लेकिन मुल्ला चुप न रह सका, वह बोला : "यह भी कोई समस्या है? उस एक स्त्री को ढूंढ कर मार डालने से ही तो संसार की समस्या समाप्त हो सकती है।"

○ ○
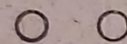
"हमारी सीमा में आपका आगमन किस लिए हुआ है? क्या है प्रयोजन आपके आने का?"

"मैं यहां एक अत्यंत गोपनीय कार्य के लिए आया हुआ हूँ।" मुल्ला नसरुद्दीन ने पड़ोसी देश की सीमा के अधिकारियों से कहा।

"वह कार्य क्या है?" पूछा गया।

"यह मुझे भी मालूम नहीं।" नसरुद्दीन बोला, "असल में कार्य इतना गोपनीय है कि जिन्होंने मुझे उस कार्य के लिए यहां भेजा है, उन्होंने भी उसके बारे में कुछ नहीं बताया है।"

○ ○
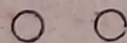
मुल्ला नसरुद्दीन : "पिछली सीट पर बैठे हुए विद्यार्थी आपस में नोट्स लेना-देना बंद कर दें। यह परीक्षा है, कोई मजाक नहीं।"

एक विद्यार्थी : "मुल्ला, ये नोट्स नहीं हैं, बल्कि पत्ते हैं। हम ताश खेल रहे हैं।"

मुल्ला नसरुद्दीन ने विनम्रतापूर्वक कहा : "तब मैं अपनी भूल के लिए क्षमाप्रार्थी हूं।"

○ ○
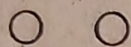
मुल्ला नसरुद्दीन और उसके चार दोस्त अफीम पीकर अपने गांव से दूसरे गांव की ओर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें प्यास लगी। दूर जाकर उन्हें एक कुआं दिखाई दिया। परन्तु उस पर सख्त धूप थी। मुल्ला ने कहा : "देखो यारों—कुआं तो मिल गया किंतु धूप के करण इसका पानी गर्म होगा। सभी जोर लगाओ और इसे छाया में ले चलो।"

सभी ने एक आवाज होकर कहा : "ठीक है।" और अपना-अपना सिर कुए की दीवार से लगा दिया और लगे जोर लगाने। इसी बीच उनका नशा तेज हो गया और वे सब के सब वहीं ढेर हो गये।

दिन ढले नसरुद्दीन को होश आया तो उसने देखा कि कुआं अब छांव में है। वह चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा : "बस करो यारो, अब बस करो। देखो कुआं छांव में आ गया है। कहीं ऐसा न हो कि ज्यादा धक्के देने से फिर धूप में चला जाये।"

बेहोश आदमी की सफलताओं-असफलताओं का सारा लेखा-जोखा इस घटना में है। सोचें, फिर-फिर सोचें।

○ ○
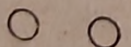
एक आदमी काफी हाउस में बड़ी शेखी मार रहा था। वह कह रहा था : "मेरे दादा इतने बड़े तैराक थे कि एक बार तीन दिन तक लगातार तैरते रहे थे।"

यह सुन कर मुल्ला नसरुद्दीन बोला, "यह कुछ भी नहीं। मेरे दादा से बड़ा तैराक न हुआ है, न हो सकता है।"

उस आदमी ने पूछा : वह कैसे ?"

मुल्ला ने कहा : "वे ५० वर्ष पहले एक तालाब पर तैरने गये थे और आज तक नहीं लोटे हैं।"

○ ○
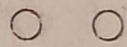
परेशानियां ही परेशानियां हैं।

दुनिया में परेशानियों की क्या कमी है ?

और यदि आपने कुछ परेशानियां पैदा न भी कीं तो चिंतित न हों—परेशानियां ऐसे भी पर्याप्त से ज्यादा हैं।

मुल्ला नसरूद्दीन के दोनों बेटे ट्रेन में बड़ा उत्पात कर रहे थे। मुल्ला ने उनकी जमकर ठुकाई की। एक अधेड़, मोटी, भद्र महिला ने अभी-अभी डब्बे में प्रवेश किया था। उसे मुल्ला के पुत्रों के गुणों का कुछ भी अंदाज न था। वह मुल्ला से बोली : "महाशय, यदि आपने बच्चों को और सताया तो मैं आपके लिए परेशानी खड़ी कर दूंगी।"

"परेशानी ?" मुल्ला नसरुद्दीन हँसा और बोला : "देवी, आपको क्या पता कि मुझे कितनी परेशानी है ? मेरी मां अस्पताल में है। मेरे पिता का अभी-अभी देहांत हुआ है। मैं खुद हृदय-रोग से पीड़ित हूं। मेरी लड़की ने एक साथ तीन बच्चों को जन्म दिया है। मैं अभी अपनी मरणासन्न सास को देखने जा रहा हूं। मेरी पत्नी किसी के साथ भाग गई है। मेरे इन दोनों बच्चों में से एक ने मेरी अंगुली

काट डाली है और दूसरे ने टिकिट चबा डाले हैं। इतना ही नहीं, मुझे अभी-अभी पता चला है कि मैं गलत ट्रेन में यात्रा कर रहा हूं। और अब आप और परेशानी खड़ी करने का विचार कर रही हैं।"

○ ○

"मुल्ला," पत्नी ने फुसफुसाकर पूछा मुल्ला नसरुद्दीन से, "क्या तुम भी कुछ आवाज सुन रहे हो ?"

"हां ! चोर मालूम पड़ता है।" कह कर मुल्ला बिस्तर से उठने लगा।

"देखो," पत्नी बोली, "सम्हल कर कुछ भी करना ! व्यर्थ खतरा मोल लेने से क्या फायदा ? फिर भी तुम करोगे क्या यह तो बताओ ?"

मुल्ला बोला: फिलहाल तो मैं इस कमरे का ताला अंदर से बंद करने जा रहा हूं।"

○ ○

अपने-अपने में सभी पागल हैं।

दूसरे का किसे है ख्याल ?

मुल्ला नसरुद्दीन के कमरे में दीवाली को रात भर ताश खेला जाता रहा। वह हो-हल्ला रहा कि कुछ न पूछिये। आखिर तंग आकर बराबर के कमरे के पड़ोसी ने दीवार पर मुक्के मारने शुरू किये, इस आशा में कि मुल्ला और उसके साथी खिलाड़ी संभवतः संकेत समझ जावें और शोरगुल बंद कर दें।

लेकिन तत्काल ही उस पड़ोसी को मुल्ला नसरुद्दीन की आवाज सुनाई दी "अरे भाई, वक्त-नावक्त कुछ तो सोचो ! यह समय भला तसवीर टांगने के लिए कील ठोकने का है ?"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन ने जांची गई परीक्षा की कापियों को विद्यार्थियों को लौटाकर कहा : "किसी को कुछ पूछना तो नहीं है ?"

"जी, मुझे। आपने मेरी जांची हुई कापी के आखीर में जो लिखा है उसे मैं पढ़ नहीं पा रहा हूं।" एक विद्यार्थी बोला और उसने अपनी कापी मुल्ला के सामने रख दी।

मुल्ला बड़ी मुश्किल में पड़ा। उसे खुद की लिखावट भी कभी समझ में नहीं आती थी। बड़े सोच-विचार और माथा-पच्ची के बाद वह बोला, "नालायक कहीं का ! इतना भी नहीं पढ़ सकता ? यही तो लिखा है कि साफ-साफ लिखने की आदत डालो।"

○ ○

अनुमानों से सत्य का कोई भी संबंध नहीं है।

फिर वे अनुमान चाहे कितने ही तर्कसंगत कारणों पर क्यों न खड़े हों।

मुल्ला नसरुद्दीन की तीन लड़कियां थीं। बड़ी लड़की की शादी दोपुरनगर में हुई। साल भर बाद उसने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया। फिर मुल्ला ने दूसरी लड़की का विवाह त्रिमूर्तिपुर में किया और उसने एक साथ तीन बच्चों को जन्म दिया। कुछ दिन बाद उसकी तीसरी लड़की के लिए विवाह का प्रस्ताव आया। लड़का सहस्रबाहु नगर में रहता था। मुल्ला नसरुद्दीनने तुरन्त उत्तर दिया : "मुझे और कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन लड़के को सहस्रबाहु नगर छोड़ कर कहीं और बसना होगा।"

○ ○

गांव में एक महात्मा का आगमन हुआ था। वे शराब के बड़े दुश्मन थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा : "शराब पीनें से तो दुश्चरित्र होना अच्छा है।"

मुल्ला नसरुद्दीन भी था श्रोताओं में। उसने अत्यधिक आनंदित हो खड़े होकर कहा: "आपकी बात का कौन समर्थन नहीं करेगा ?"

○ ○
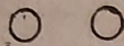
व्यर्थ की स्मृति का प्रयोजन ही क्या है ?

असार का विस्मरण हीं उचित है।

मुल्ला नसरुद्दीन का एक विदेशी सें परिचय कराया गया। जिसने परिचय कराया उसने कहा कि मुल्ला की स्मरण-शक्ति असाधारण है। विदेशी ने मुल्ला से पूछा, "अच्छा यह बताओ कि बीस वर्ष पूर्व अमुक सन् की अमुक तारीख को सुबह के वक्त तुमने क्या खाया था ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "खिचड़ी।"

विदेशी को इस उत्तर से बड़ी निराशा हुई।

पन्द्रह वर्ष बाद वही विदेशी फिर आया और इत्तफाक से उसकी मुल्ला से पुन: भेंट हो गई।

विदेशी ने पूछा : "कहो, कैसे ?"

मुल्ला नसरुद्दीन बोला, "आम की चटनी के साथ।"

○ ○
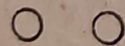
एक मित्र ने कहा मुल्ला नसरुद्दीन से : "विवाह इस कारण नहीं करना चाहता हूं कि मुझे स्त्रियों से बहुत डर लगता है।"

मुल्ला ने उसे समझाया और कहा : "यह बात है तब तो तुरन्त विवाह कर डालो। मैं तुम्हें अनुभव से कहता हूं; क्योंकि विवाह के बाद एक ही स्त्री का भय रह जाता है।"

○ ○
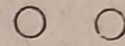
दर्शनशास्त्र से जरा सावधान ही रहना।

अन्यथा सोच-विचार तो बहुत होगा।

पर पहुंचोगे कहीं भी नहीं।

मुल्ला नसरुद्दीन से उसके मित्र ने कहा। "मुल्ला, सुना है तुम्हारे यहां जुड़वां बच्चे हुए हैं। लड़के हैं या लड़कियां ?"

नसरुद्दीन ने आंखें बंद कर लीं।

बहुत सोचा।

सिर खुजलाया।

फिर आंखें बंद कीं।

और भी सोचा।

और उसके माथे पर पसीने की बूंदें झलक आईं।

तब उसने कहा, "मेरा ख्याल है कि एक लड़की है और एक लड़का, पर संभव है कि मामला उल्टा हो हो यानी कि एक लड़का हो और एक लड़की।"

○ ○
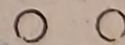
मुल्ला नसरुद्दीन नाटक तो देख ही नहीं रहा था। वह देखे जा रहा था पास में ही बैठी एक स्त्री को। स्त्री भी उसे ही देख रही थी। और जब मुल्ला ने पाया कि वह स्त्री भी उसे ही देख रही है तो उसने फुसफुसाकर कहा : "सुनिये, क्या आप अपना एक चित्र मुझे देंगी ?"

स्त्री के हर्ष का कोई ठिकाना न था। उसने कहा मुल्ला से, "जरूर दूंगी। एक तो जेब में ही है। हां, क्या करियेगा मेरे फोटो का ?"

नसरुद्दीन गंभीरता से बोला, "अपने बच्चों को डरवाऊंगा।"

○ ○
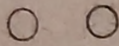
मैके से वापिस आ रही अपनी पत्नी को लेने मुल्ला नसरुद्दीन स्टेशन आया था। पत्नी उतरी तो मुल्ला ने बढ़ कर सामान उतरवाया और पूछा : "और सब ठीक-ठाक है न ?"

"बस हो गया ?" पत्नी ने आग्नेय नेत्रों से मुल्ला की ओर देखा और दूर एक दंपत्ति की ओर संकेत कर बोली, "वह भी पति-पत्नी हैं। कितने खुश हैं। कितने प्रेम से पति पत्नी से मिल रहा है, प्यार कर रहा है, आलिंगन कर रहा है। और एक तुम हो कि इतने अरसे के बाद मिलने पर ऐसा सलूक कर रहे हो।"

"वह तो ठीक है," मुल्ला ने कहा, "लेकिन वह पति अपनी पत्नी को लाने नहीं, पहुंचाने आया है।"

○ ○
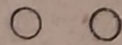
अज्ञान में ही जिन्दगी के सब दांव हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन ने 'सुल्तान' नाम के घोड़े पर दांव लगाया और दोबारा वह फिर उसी घोड़े पर दांव लगाने आया।

लेकिन जब वह तीसरी बार भी उसी घोड़े पर दांव लगाने आया तो वहां खड़े एक आदमी से न रहा गया। उसने मुल्ला से कहा : "महाशय, आप क्यों इतना रुपया इस घोड़े पर लगा रहे हैं ? यह घोड़ा नहीं जीतेगा।"

"तुम्हें कैसे मालूम ?" मुल्ला ने पूछा।

"अगर आप जानना ही चाहते हैं तो बताये देता हूं, मैं इस घोड़े का मालिक हूं।" उस अजनबी ने कहा।

"ओह, तब तो यह दौड़ बहुत ही धीमी रहेगी," मुल्ला ने चिंतित हो कहा, "क्योंकि बाकी के चार घोड़े मेरे हैं।"

○ ○
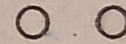
बस में बड़ी भीड़ थी। लकदक फैशनेबिल महिला को मैले-कुचैले वस्त्र पहने मुल्ला नसरुद्दीन के बराबर सीट मिली। मुल्ला सर्दी-जुकाम से बुरी तरह पीड़ित था और उसकी नाक इस बुरी तरह बह रही थी कि आखिर महिला से नहीं रहा गया और उसे कहना पड़ा, "महानुभाव, आपके पास रुमाल तो होगा ?"

नसरुद्दीन ने क्षण भर तक अत्यंत अविश्वास से महिला को घूरकर जवाब दिया : "है, मगर मैं दूंगा नहीं।"

○ ○
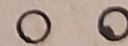
"मैंने तुमसे कहा था न कि दूध उबलने के समय का ध्यान रखना ? फिर भी तुमने कोई ध्यान नहीं दिया," मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी मुल्ला पर बिगड़ी।

"मैंने ध्यान दिया था," मुल्ला ने शांति से कहा, "दूध ठीक दस बज कर तीस मिनट पर उबला है।"

○ ○
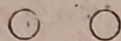
मनुष्य जब अपराधी होता है तो एक के प्रति नहीं अनेक के प्रति ही होता है।

वस्तुतः तो वह समस्त के प्रति ही अपराधी होता है।

मुल्ला नसरुद्दीन को एक गुमनाम पत्र मिला जिसमें लिखा था कि आप मुर्गियां चुराना बन्द कर दें, अन्यथा आपकी जान खतरे में है। मुल्ला उस पत्र को पुलिस-थाने ले गया और पूरी जांच-पड़ताल कर पत्र-प्रेषक का नाम मालूम करने की प्रार्थना की।

पुलिस अधिकारी ने उसे समझाते हुए कहा : "नसरुद्दीन, इस पत्र में जैसा लिखा है वैसा कर दो, फिर तुम्हें उसके नाम से मतलब ?"

नसरुद्दीन ने अत्यन्त उदास होकर कहा :

"साहब, इस शैतान का नाम तो मालूम होना ही चाहिए, अन्यथा मुझे कैसे मालूम हो कि मैं किस व्यक्ति की मुर्गियां चुराना बन्द करूं।"

○ ○
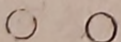
"मैं एक तरह से मस्तिष्क-ज्ञाता हूं," काफी-हाउस में एक व्यक्ति स्वयं की ही प्रशंसा में मशगूल था, "एक ही दृष्टि डाल कर मैं बता सकता हूं कि कोई आदमी मेरे बारे में क्या सोच रहा है।"

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे बीच में ही टोक कर कहा : "लेकिन क्या यह बात आपको असमंजस में नहीं डाल देती ?"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन पर मारपीट का मुकदमा था। लेकिन वह बार-बार कहता रहा कि उसने वादी को जरा-सा धक्का ही दिया था।

"कितनी जोर का ?" विरोधी वकील ने पूछा।

"ओह, बस जरा-सा," मुल्ला ने दुहराया।

"अच्छा, नसरुद्दीन, तुम जज और जूरी को समझाने के लिए कटघरे से निकल कर आओ और मुझे धक्का देकर बताओ कि तुम्हारा जरा-सा से क्या मतलब है ?"

मुल्ला कटघरे से उतरा और प्रतीक्षा करते विरोधी वकील के पास पहुँचा। तभी अदालत में चांटे की जोरदार आवाज़ गूंज उठी और फिर मुल्ला ने वकील को कमर से पकड़कर ऊपर उठा लिया और उसे सामने रखी मेज पर जोर से पटक दिया।

और फिर वह पगलाये हुए वकील की ओर से मुड़कर अत्यंत भोलेपन से जज बोला, "हुजूर, इसका एक-बटा दसवां हिस्सा था।"

○ ○
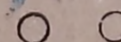
एक हृष्ट-पुष्ट पड़ोसी से मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा : "आप अपने स्वास्थ्य की रक्षा किस प्रकार करते हैं ?"

"यह तो अति साधारण सी बात है। सवेरे सूर्य की प्रथम किरण पड़ते ही मैं उठ जाता हूं, लेकिन क्या आप ऐसा नहीं करते हैं ?" पड़ोसी ने पूछा।

"करता तो मैं भी ऐसा ही हूं," नसरुद्दीन बोला, "लेकिन दुर्भाग्य से मेरे कमरे की खिड़की पश्चिम की ओर है।"

○ ○
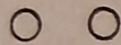
काश ! जीवन की मंजिल स्वयं ही आ जाती सामने और आपको यात्रा का कष्ट न करना पड़ता। पर ऐसा होता नहीं है, यद्यपि प्रत्येक सोचता है कि ऐसा ही होता तो अच्छा था।

मुल्ला नसरुद्दीन पड़ा था शराब में धुत् सड़क के किनारे।

पुलिस के आदमी ने उसे हिलाकर कहा : "नसरुद्दीन, आधी रात हो गई है। घर क्यों नहीं जा रहे हो अब ?"

नसरुद्दीन बोला : "अब जाने की जरूरत ही नहीं है। सारा गांव मेरे चारों ओर घूम रहा है और जैसे ही मेरा घर सामने आ जायेगा मैं उसमें तत्काल प्रवेश कर जाऊंगा।"

○ ○
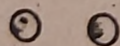
एक शिकारी जंगल में खो गया था। तीन दिन की अथक् चेष्टा के बाद भी जंगल के बाहर ले जाने वाला कोई मार्ग नहीं दिखाई देता था। और जैसे-जैसे समय बीतता था वैसे-वैसे उसकी निराशा भी गहन होती जाती थी। लेकिन चौथे दिन सुबह ही उसे एक यात्री के पदचिन्ह मिल गये और उन्हें खोजता हुआ वह उस व्यक्ति के पास भी पहुंच गया। वह व्यक्ति था मुल्ला नसरुद्दीन, जो कि एक वृक्ष के नीचे आराम कर रहा था। मुल्ला को देखते ही शिकारी खुशी से पागल हो चिल्लाया : "भगवान का धन्यवाद ! मैं इस जंगल में चार दिनों से खोया हुआ हूं।"

"इतनी जल्दी खैर न मनाओ, दोस्त !" मुल्ला ने कहा : "मुझे खोये दो हफ्ते बीत चुके हैं।"

○ ○
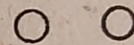
मुल्ला नसरुद्दीन को मित्र के यहां आए हुये महीना भर बीत गया था। मित्र और मित्र का परिवार मुल्ला से बुरी तरह ऊब गया था, लेकिन वह जाने का कोई नाम ही नहीं लेता था। आखिर मित्र की पत्नी एक दिन उससे बोली, "मुल्ला, आपके बीवी-बच्चों को आपकी याद आती होगी ? वे आपसे मिलने के लिए बेचैन हो रहे होंगे ?"

मुल्ला ने कहा : "अनेक धन्यवाद ! बड़ी कृपा है ! मैं आज ही पत्र लिखकर उन सबको यहां बुलाये लेता हूं।"

○ ○
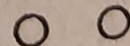
मुल्ला नसरुद्दीन को बचपन से ही गाली देने की आदत थी, जो बड़े होने पर भी नहीं छूटी। उसकी पत्नी बड़ी परेशान थी और सुधार के लिए किसी अवसर की तलाश में थी।

एक दिन तस्वीर टांगते समय मुल्ला की हथौड़ी कील की बजाय उसके अंगूठे पर पड़ी और उसने चुन-चुन कर गाली बकनी आरंभ की। पत्नी चुपचाप सुनती रही और फिर मुल्ला के चुप हो जाने पर उसने उन सब भद्दी और बेहूदी गालियों को अत्यन्त रसपूर्वक दुहराया। सोचा था उसने कि इससे मुल्ला को निश्चय ही धक्का लगेगा और शायद वह अपनी आदत में सुधार भी कर ले।

और नसरुद्दीन को धक्का लगा भी क्योंकि वह अत्यन्त गंभीरता से बोला : "देवी ! गालियां तो तुमने ठीक याद कर लीं, लेकिन अभी देने का ढंग नहीं आया है।"

○ ○
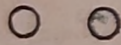
मुल्ला नसरुद्दीन संसार की छोटी कहानी का जन्मदाता है। वह कहा करता था :

"एक पहाड़ी पर एक सुखी मनुष्य रहता था। एक लड़की उस पहाड़ी पर गई। और अब वहां कोई सुखी मनुष्य नहीं रहता है।"

○ ○
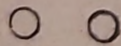
सलाह बड़ी सस्ती चीज है और दूसरों को सलाह देना सदा ही आसान है।

एक अत्यन्त परेशान आदमी मुल्ला नसरुद्दीन के पास आया और बोला : "मुल्ला मैं रोज रात को भयानक स्वप्न देखता हूं। एकदम अजीब-अजीब आवाजें आने लगती हैं, हवा में मकड़ी के जाले गोल-गोल घूमते हुए मुझे फंसाने बढ़ आते हैं और मैं भाग उठता हूं। सामने होता है एक तालाब और अंततः मैं उसमें कूद पड़ता हूं। तालाब गहरा है। मैं बहुत हाथ-पांव मारता हूं और थक कर उसमें डूबने लगता हूं। दम घुटने लगता है और मैं चीख पड़ता हूं—बचाओ ! बचाओ !! फिर नींद खुल जाती है और मैं पसीने में तरबतर होता हूं।"

मुल्ला नसरुद्दीन बड़ी देर तक सोचता रहा, फिर बोला : "खैर शुरू में कुछ दिक्कत होगी, पर बाद में तैरना सीख जाने पर सब ठीक हो जायगा।"

○ ○
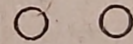
मुल्ला नसरुद्दीन किसी से अपने लड़कों का रोना रो रहा था। बोला : "दो लड़के हैं : एक तो राजनीति में है और दूसरे का हाल भी शोचनीय है।"

○ ○
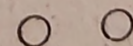
खरीददारी से लौटने के बाद रसोई में घुसते ही मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी को जले की बदबू और धुआं मालूम पड़ा।

"मुल्ला," वह क्रोधित हो बोली, "मैं तुमसे कह गई थी कि रसोई में साग पर निगाह रखना?"

"मैंने निगाह रखी थी," नसरुद्दीन ने गंभीरता से कहा, "लेकिन एक ऐसा समय भी आया कि धुयें के कारण फिर और निगाह रखना असंभव ही हो गया।"

○ ○
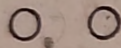
मुल्ला नसरुद्दीन के दांत में दर्द था। सिवाय दांत निकलवाने के और कोई चारा नहीं दिखाई देता था। लाचार होकर वह दांत वाले डाक्टर के यहां गया लेकिन उसकी दांत निकलवाने की हिम्मत न हुई।

दांत के डाक्टर ने यह देखकर अपने कम्पाउंडर से कहा: "मुल्ला को थोड़ी सी ब्रांडी पिलाओ ताकि घबराहट कम हो जाए।"

जब मुल्ला ब्रांडी पी चुका तो डाक्टर ने पूछा: "कहो, नसरुद्दीन, अब क्या हाल है, कुछ हिम्मत आई?"

लेकिन मुल्ला चुप बैठा रहा। डाक्टर ने उसे थोड़ी ब्रांडी और पिलवाई और पूछा: "कहो अब क्या हाल है?"

यह सुनते ही नसरुद्दीन कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और बोला: "देखूं, अब किसकी हिम्मत है जो मेरे दांत में हाथ लगाये?"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी मुल्ला के सामने अपना दिल खोल रही थी और कह रही थी कि वह घमंडी होने के काबिल है।

"मैं बहुधा शीशे के सामने खड़ी हो जाती हूं और यह सोचती हूं कि मैं कितनी सुन्दर हूं" वह बोली।

"यह कोई पाप नहीं, व्यर्थ ही चिंतित न होओ!" कहा नसरुद्दीन ने, "यह तो सिर्फ तुम्हारी गलती है।"

○ ○
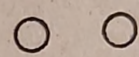
"मैंने गले के कारण लम्बे व्याख्यान देने बन्द कर दिये हैं," मुल्ला नसरुद्दीन ने काफी हाउस में एक व्याख्यान शुरू करते हुए कहा।

"क्यों, क्या गला खराब हो गया है, नसरुद्दीन?" किसी ने आवाज कसी।

"नहीं," नसरुद्दीन बोला, "कई आदमियों ने उसे काट डालने की धमकी दी है।"

○ ○
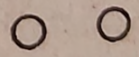
बिगड़ना भी कभी-कभी बिगड़ना नहीं होता है। और बनाना भी कभी बस बिगड़ना ही है।

धर्मदिवस था कोई। मस्जिद में बड़ी भीड़ थी। नमाज के बाद धर्मगुरु का उपदेश हो रहा था। मुल्ला नसरुद्दीन को भी मस्जिद की भीड़ में पिछली कतार में बैठा देख एक मित्र ने पूछा: "नसरुद्दीन, तुम और यहां?"

मुल्ला ने कहा गंभीरता से : "आदमी को बिगड़ते देर ही क्या लगती है?"

○ ○

एक सभा में मुल्ला नसरुद्दीन प्रधान वक्ता था। बोलने के पूर्व उसने अपने हाथ से घड़ी उतार कर मेज पर अपने सामने रख ली। "इसे देख कर मुझे पता लग जायेगा," उसने कहा, "कि मैं कितनी देर से बोल रहा हूं! शर्त यह है कि मुझे आरम्भ करने का समय याद रहे।"

○ ○

"और फिर मैं कहना चाहता हूं—याद रखो नसरुद्दीन, धन-संपत्ति हमेशा सुख साथ नहीं लाते हैं।" वृद्ध धर्मगुरु ने समझाया मुल्ला नसरुद्दीन को।

"यह तो माना," बोला नसरुद्दीन, "लेकिन फिर भी वे आपको सबसे अच्छी चिन्तायें और मनपसंद घाव छांटने में सहायता अवश्य देते हैं।"

○ ○

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन सड़क पर जाते-जाते बेसुध होकर गिर पड़ा। देखते ही देखते भीड़ इकट्ठी हो गई। कोई पानी के छींटे मारने की राय देने लगा, कोई जूता सुंघाने को कहने लगा। एक युवती बार-बार चिल्ला रही थी, "अरे, इस वृद्ध को जल्दी से एक पाव जलेबी दूध में डाल कर खिलाओ।" पर उसकी आवाज किसी ने न सुनी।

नसरुद्दीन कुछ देर तक तो यह सब बेसुधी में ही सुनता रहा, पर फिर उससे न रहा गया तो बोला : "अरे सब अपनी ही बकवास में मस्त हैं, कोई उस बेचारी युवती की भी तो सुनो।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी बाहर से गुस्से भरी आकर कहने लगी : "आज कल के फकीर बड़े फरेबी होते हैं।"

नसरुद्दीन : "क्यों क्या बात हुई ?"

पत्नी : "हुआ यह जी, एक फकीर की गर्दन में तख्ती लटक रही थी जिस पर लिखा था : 'जन्म से अंधा।' उसे मैंने कुछ पैसे दिये तो कहने लगा : 'हे सुन्दरी ! भगवान तुम्हें खुश रखें।' उसे कैसे मालूम हुआ कि मैं सुन्दर हूं।"

नसरुद्दीन : "बेचारा ! तब तो वह वास्तव में अंधा है।"

आंखों से सभी कुछ दिखाई पड़ता है इस भ्रम में मत रहना। क्योंकि, कुछ चीजें तो केवल अंधेपन में ही दिखाई पड़ती हैं।

○ ○

"मुल्ला, तुम बीमा कंपनी में जाकर मेरा जीवन-बीमा क्यों कराना चाहते हो ?" वृद्ध पत्नी ने पूछा, "बहुत संभव है, मैं तुमसे अधिक दिन जिंदा रहूं ?"

"लो, फिर वही बात !" मुल्ला नसरुद्दीन बोला, "तुम हमेशा बात के उल्टे पहलू की ओर ही क्यों देखती हो ?"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन को शराब पिये हुए पकड़े जाने के लिए अदालत में प्रस्तुत किया गया था।

जज ने पूछा : "रात को तीन बजे तुम कहां जा रहे थे, नसरुद्दीन ?"

मुल्ला ने कहा : "व्याख्यान सुनने।"

"व्याख्यान, उस वक्त ?" जज ने आश्चर्य से पूछा।

"हां, सचमुच !" मुल्ला ने कहा, "मेरी पत्नी कभी-कभी तो इससे भी देर तक व्याख्यान देने के लिए ठहरती है।"

○ ○

"मुल्ला, तुम बड़े थके-थके मालूम पड़ते हो," मधुशाला में पूछा किसी ने मुल्ला नसरुद्दीन से।

"हां भाई ! मेरी नींद पूरी नहीं होती। मेरी पत्नी रात में जहां जरा सी आहट होती है, तो फौरन मुझे जगा कर चोर के आने की सूचना देती है।" नसरुद्दीन बोला।

"अरे तो तुमने उसे कहा नहीं कि चोर आहट करके कभी नहीं आयेगा ?" मित्र ने सलाह दी।

"यही तो मैंने कहा था जिससे मेरी और भी कमबख्ती आ गई," बोला नसरुद्दीन, "अब रात में जब भी सुनसान हो जाता है तभी वह चोर की आशंका करने लगती है।"

○ ○

जो है उसे मनुष्य भूल जाता है।
जो नहीं है, उसे याद रखता है।
अभाव खटकता जो है।

मुल्ला नसरुद्दीन और शेख फरीद में बड़ी दोस्ती थी। एक दिन फरीद ने मुल्ला से कहा : "मुल्ला, मेरी-तुम्हारी बड़ी ही मित्रता है। अब मैं परदेश जाता हूं सो कृपा कर तुम मुझे अपनी अंगूठी दे दो, जिससे मुझे हर समय तुम्हारी याद बनी रहे।"

मुल्ला आंखें बंद करके गहन चिंतन में चला गया।

और बहुत समय बाद आंख खोलकर बोला : "अंगूठी की क्या जरूरत ? जब तुम अपनी अंगुली देखोगे तब तुम्हें याद आये बिना न रहेगी कि मुल्ला नसरुद्दीन ने अंगूठी नहीं दी थी !"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन की बीवीने एक दिन पूछा मुल्ला से : "क्यों जी, अगर मैं मर जाऊं तो क्या तुम मेरा मातम मनाओगे ?"

मुल्ला ने कहा धीरे से : "हां-हां, जरूर मनाऊंगा।"

"और तुम मेरी कब्र पर भी अक्सर जाओगे !" बीबी ने पूछा।

मुल्ला गहन सोच में पड़ गया और फिर बोला: "क्यों नहीं, मधुशाला जाते समय कब्रिस्तान रास्ते में ही तो पड़ता है।"

○ ○

मनुष्य की तथाकथित नैतिकता सिवाय भय के और कुछ नहीं है। और जहां भय है वहां नैतिकता कहां ?

मुल्ला नसरुद्दीन कह रहा था किसी मेहमान से कि उसके गांव के लोग बड़े ईमानदार हैं। मेहमान को इस पर भरोसा न आया तो उसने पुनः पूछा : "क्या गांव के सभी लोग ईमानदार हैं ?"

"जी हां, सभी बड़े नेक और ईमानदार हैं," मुल्ला ने कहा।

"नसरुद्दीन, फिर तुम्हें इस बन्दूक को सदा पास में रखने की क्या जरूरत है ?" मेहमान ने पूछा।

"यह तो उन्हें ईमानदार बनाये रखने के लिए है," कहा नसरुद्दीन ने।

○ ○

अमावस की अंधेरी रात थी ! पत्नी से कुछ जबानी गरमागरमी होने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन कुर्सी से कूद कर खड़ा हो गया।

"तुम सीमा के बाहर होती जा रही हो," वह चिल्लाया : "खैर, यह हमारा अंतिम झगड़ा है। आज मैं तुम्हारे जीवन से हमेशा के लिए जा रहा हूं।"

"लेकिन तुम जा कहां रहे हो ?" पत्नी ने घबरा कर पूछा।

'तुम्हें इससे मतलब ? मैं सागर में डूब मरने जा रहा हूं। अब मैं जीवित नहीं रहूंगा," मुल्ला ने कहा।

इतना कह कर मुल्ला ने बाहर का द्वार खोला। और फिर उसे बंद कर वह पत्नी पर पुनः गरजा : "अपने भाग्य को सराहो कि इस समय अंधेरा है और बाहर बारिश पड़ रही है।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन के लाख मना करने पर भी मायके जाते समय पत्नी अपने साथ जरूरत से ज्यादा समान ले कर स्टेशन पर आ गई।

ट्रेन के प्लेटफार्म पर आते ही मुल्ला ने पत्नी से कहा : "अच्छा होता अगर तुम अपने साथ लोहे वाली आल्मारी भी ले आई होती।"

"चलते समय तो ताने देने से बाज आइये," पत्नी बोली।

"ताने देने का मेरा जरा भी इरादा नहीं," मुल्ला ने गंभीर हो कर कहा, "असल में तुम्हारा टिकिट मैं उसी अल्मारी में भूल आया हूं।"

○ ○
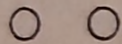
मुल्ला नसरुद्दीन को अपना साला फूटी आंख भी नहीं सुहाता था। एक दिन मुल्ला की बीवी बिगड़ कर बोली,"यह क्या तुम बेकार की झांय-झांय लगाये रहते हो। तुमने मेरे भाई के हाथ भी लगाया तो कम से कम सौ रुपया जुर्माना होगा।"

इसके बाद नसरुद्दीन ने एक साल तक साले के बारे में अपनी जबान नहीं खोली, तो बीवी प्रसन्न होकर बोली, "अब तुम रास्ते पर आये हो। अच्छा हुआ उस……"

"कौन बेवकूफ कहता है ?" नसरुद्दीन गरजा : "मैं पैसे इकट्ठे कर रहा हूं।"

○ ○
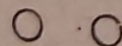
क्या ऐसे भी प्रश्न हैं जो हल नहीं हो सकते हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन और एक बड़े धर्मगुरु में बहस हो रही थी। धर्मगुरु बोला : "मेरी समझ में तो एक बात नहीं आती कि जो नरक में रहते हैं वे लड़ते समय एक दूसरे को कहां भेजते होंगे ?"

और क्या धर्मगुरुओं द्वारा उठाये गये अधिक प्रश्न ऐसे ही नहीं हैं ?

फिर जैसे प्रश्न, वैसे ही उत्तर भी मिल जाते हैं।

नसरुद्दीन ने कहा : "नरक में लड़ाई होगी ही क्यों ? वहां तो वे ही जाते हैं जो लड़-लड़कर तृप्त हो चुके हैं। लड़ाइयां तो सदा स्वर्ग में ही होती हैं।"

○ ○
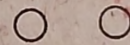
जज : "नसरुद्दीन तुमने अपनी पत्नी की हत्या तीर-कमान से क्यों की ?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "जैसा कि जानते ही हैं हजूर, कि मैं शांति-प्रिय जीव हूं। और उसी लिए बंदूक चलाकर बच्चों की नींद खराब नहीं करना चाहता था। फिर पास-पड़ोस के लोगों का ध्यान रखना भी तो मेरा धर्म है।"

○ ○
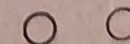
अपने ही अनुभव को सभी कुछ मत मान लेना। वह खतर-नाक वृत्ति है। यद्यपि पाई जाती है सभी में।

मोटरों की कतार का तथा सिपाही के खड़े हाथ का न ध्यान कर मुल्ला नसरुद्दीन ने बड़ी शांति से चौराहा पार करना आरंभ किया था।

ब्रेकों की आवाज गूंज उठी। सिपाही नाक-भौं चढ़ाता आया और बोला : "क्या आपने मेरा हाथ खड़ा नहीं देखा था ? क्या आप इसका मतलब नहीं जानते हैं ?"

"खड़े हाथ का मतलब मैं नहीं जानूंगा ?" बोला नसरुद्दीन : "पचास साल से ज्यादा हो गए हैं मुझे बच्चों को पढ़ाते हुए।"

○ ○
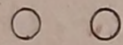
मुल्ला नसरुद्दीन के मधुशाला में आते ही बहुत से मित्रों ने उसे घेर लिया और बधाइयां देने लगे। मुल्ला की धनी चाची मर गई थी और वसीयत में मुल्ला का नाम है ऐसी खबर मुल्ला के पहले ही मधुशाला में पहुंच गई थी। लेकिन मुल्ला स्वयं अति उदास था। एक मित्र ने पूछ ही लिया : "नसरुद्दीन, उदास क्यों हो ? क्या तुम्हारी धनी चाची के मरने की खबर-सच नहीं है ?"

मुल्ला ने कहा, "खबर असंभव होते हुए भी सौ प्रतिशत सच है।"

"फिर तुम उदास क्यों हो ?" दूसरे ने पूछा।

मुल्ला ने कहा : "जरा सोचो, पिछले आठ वर्षों से मैं उस

[उस]की बुढ़िया की बिल्लियों पर प्यार जता रहा था जिससे वह [वस]ीयत लिखते समय याद रखे।"

"अच्छा तो उसने तुम्हें क्या दिया ?" तीसरे ने पूछा।

नसरुद्दीन बोला : "अपनी सारी बिल्लियां !"

○ ○
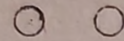
मुल्ला नसरुद्दीन गया था राजधानी। पत्नी ने एक छाता खरीद [ला]ने को कहा था। लेकिन यह भी कहा था कि जरा ध्यान रखना, [रा]जधानी के दुकानदार हर चीज की दुगनी कीमत बताते हैं।

मुल्ला ने एक दूकान में जाकर छाते के दाम पूछे। दुकानदार ने [द]स रुपये बताये।

मुल्ला ने कहा : "मैं तो पांच रुपये दूंगा।"

दुकानदार ने कहा : "पांच तो नहीं, अच्छा मैं आठ रुपये ले [लू]ंगा।"

मुल्ला ने कहा : "तब तो मैं चार ही दूंगा।"

दुकानदार ने कहा : "देखो, छह रुपये देने हों तो ले जाओ, [इ]ससे कम नहीं करूंगा।"

मुल्ला ने कहा : "अब मैं सिर्फ तीन रुपये ही दूंगा।"

दुकानदार झल्ला कर बोला : "ऐसा ही है तो मुफ्त में क्यों नहीं ले जाते ?"

मुल्ला ने कहा "अगर मुफ्त में ही दे रहे हो, तो एक नहीं दो [छ]ाते लूंगा।"

○ ○
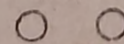
आदमी का मन सब कुछ करना और करवा लेना चाहता है। वही दुख है।

मुल्ला नसरुद्दीन गया था राजधानी में। उसके बाल बढ़ गये थे। उसने एक नाईवाड़े में जाकर पूछा : "क्या मेरी हजामत कर सकते हो?"

नाई : "क्यों नहीं दूसरों की हजामत करना ही तो मेरा धंधा है।"

नसरुद्दीन : "एक हजामत का क्या लेते हो?"

नाई : "इसकी कुछ न पूछो। जैसा काम वैसा दाम। एक आने से लेकर एक रुपये तक की बनाता हूं।"

नसरुद्दीन ने कुछ सोचा और फिर कहा : "अच्छा तो एक आने वाली बनाओ।"

नाई ने बाल छील दिये और कहा : "लो बन गई। पैसे लाओ।"

नसरुद्दीन : "बस! एक आने वाली बन गई! तो अब दो आनेवाली बनाओ।"

यह सुन नाई घबड़ाया।

तब नसरुद्दीन ने कहा : "अबे घबड़ाता क्यों है? अभी तो एक रुपये वाली तक बनवाऊंगा।"

○ ○
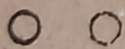
मुल्ला नसरुद्दीन रात डेढ़ बजे मकान मालिक के दरवाजे पर पहुंचा। दरवाजा खोलते हुए चिढ़े स्वर में मकान मालिक ने पूछा : "क्या बात है, नसरुद्दीन!"

नसरुद्दीन ने कहा : "मैं यह कहने आया हूं कि इस माह मैं किराया नहीं चुका पाऊंगा।"

"ओफ्फोह! मगर यह बात तो तुम सुबह भी आकर कह सकते थे।"

"हां, पर मैं अकेला ही रात भर चिंता में जागूं, यह मुझे कुछ जच नहीं रहा था।"

○ ○
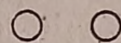
मुल्ला नसरुद्दीन अपनी कंजूसी के लिए प्रसिद्ध था। गांव के किसी व्यक्ति को उसने कभी चाय तक पर निमंत्रित नहीं किया था। एक बार गांव में खबर फैली कि मुल्ला एक बहुत बड़ा भोज देने वाला है। लोगों ने हँसकर बात टाल दी। लेकिन एक व्यक्ति का मन न माना। उसने सोचा, पता तो लगाना चाहिए, शायद खबर सच ही हो।

जब वह व्यक्ति मुल्ला के घर पहुँचा, तो उसे बाहर ही मुल्ला का नौकर महमूद मिल गया। उसने पूछा : "क्यों भाई, हमने सुना है कि मुल्ला एक बहुत बड़ा भोज देने वाला है?"

महमूद मुस्कुराया : "मुल्ला नसरुद्दीन! निश्चय ही। लेकिन प्रलय के दिन।"

उस व्यक्ति के लौट जाने पर मुल्ला ने महमूद को बुलाया। व
उन दोनों की बातें सुन चुका था। उसने नौकर से पूछा : "क्यों
हरामखोर, भोज का दिन निश्चित करने की क्या आवश्यकता थी ?

○ ○

अज्ञानी अज्ञानियों को मार्ग दिखाते रहते हैं।

अज्ञान का लम्बा अनुभव ही जैसे उनके ज्ञानी होने का मज़बू
आधार बन जाता है।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने गांव में सभी कुछ था। ज्ञानी, कवि
लेखक दार्शनिक, धर्मगुरु, शिक्षक, वैद्य इत्यादि।

एक क्षयरोग का रोगी उसके पास गया।

मुल्ला ने उसकी परीक्षा करके कहा : तुम्हारा बीमारी जल्दी ह
अच्छी हो जायेगी। बस थोड़े दिन मेरी दवा करो।"

रोगी ने प्रसन्न होकर कहा : "मुल्ला, तब तो क्या कहना
आपको इस बीमारी का अच्छा अनुभव है।"

नसरुद्दीन यह सुन चमक कर बोला : "अनुभव के क्या मानी
अरे भाई ! मुझे खुद ही पच्चीस बरस से यह बीमारी है !"

○ ○
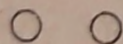
"यह बड़ा अच्छा समय है घर आने का," पत्नी मुल्ला नसरुद्दीन
के रात के दो बजे आने पर बिगड़ी : "जल्दी मुझे इसकी सफाई दो
और सच-सच बताना।"

"तुम एक बात पहले तय कर लो।" नसरुद्दीन बोला, "सफाई
चाहिए या सच बात ?"

○ ○
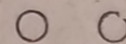
अंतिम दिन को जो याद रखता है, वही बुद्धिमान है।

लेकिन, दूसरे के नहीं, स्वयं के।

एक आदमी जबर्दस्ती मुल्ला नसरुद्दीन की पगड़ी छीन कर भाग
गया। मुल्ला ने उसका पीछा करने के बजाय सीधे कब्रिस्तान की
राह पकड़ी और वहीं डेरा डाल दिया। जो लोग यह सब खेल देख
रहे थे उन्होंने चकित हो मुल्ला से पूछा : "नसरुद्दीन, चोर तो दूसरी
तरफ भाग गया, तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

मुल्ला ने कहा : "आखिर एक दिन वह भी तो यहीं आवेगा, बस
समझ लूंगा।"

○ ○
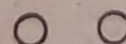
मुल्ला नसरुद्दीन बहुत बीमार था। उसने अपनी पत्नी को बुलाया और धीरे-धीरे बोला : "फ़ातिमा, मेरे मरने पर दवाओं की दुकान अपने नौकर महमूद के सुपुर्द कर देना।"

"महमूद? उससे अच्छा तो मेरा भाई रहीम दुकान अच्छी चलायेगा।"

मुल्ला ने बड़े दुख से बात मान ली : "अच्छा, अच्छा! महमूद को अपना बगीचा दे देना।"

पत्नी ने फिर सलाह दी : "मेरे ख्याल में बगीचा तो अपनी बड़ी बेटी को देना ठीक रहेगा। उसके पति को बगीचे का शौक भी है।"

मुल्ला को यह बात अत्यंत असह्य थी, फिर भी उसने उसे मान लिया "चलो, उसे ही दे दो। लेकिन अपना नदी के तट वाला मकान तो महमूद को ही दे देना।"

"वह मकान तो अपनी छोटी बेटी को सदा से पसन्द है। मेरे विचार में···।"

अब मुल्ला से नहीं रहा गया। वह कराहा, "नूरी की मां, एक बात बताओ। मर कौन रहा है···मैं या तुम?"

○ ○
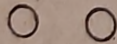
मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी बाहर के द्वार के नीचे पड़ी चिट्ठी उठाने गई।

जैसे ही उसने पत्र खोला, मुल्ला ने पूछा : "तुम्हारा है?"

"हां।"

"किसका है?"

"मेरे भाई का।"

"क्या लिखता है?"

"खास नहीं। लेकिन तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो?"

"लो!" मुल्ला झुंझलाया, "फिर तुमने मेरी बात में टांग अड़ाई।"

○ ○
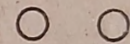
आत्मा-जागरण के बिना यह भी तो पता नहीं चलता है कि हम स्वयं के ही साथ क्या कर रहे हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन ने पी ली थी शराब, जम के। रात में वह चारपाई से गिर पड़ा तो चिल्ला कर नौकर से बोला, "महमूद! अरे देख तो कि धड़म से क्या गिरा।"

महमूद ने कहा : "मुल्ला, आप ही चारपाई के नीचे गिर पड़े हैं।"

नसरुद्दीन ने कहा : "मैं! हाय रे! पसलियां चर-चर हो गईं।"

○ ○
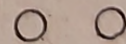
"जब मेरी और पत्नी की लड़ाई होती है तो अंतिम शब्द सदा मेरे ही होते हैं।" मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने भावी दामाद पर शान गांठी।

"अच्छा, सच!" दामाद प्रशंसा भरे स्वर में बोला, "तो आप मुझे भी इसका गुर बता दीजिए।"

"बड़ा झांसा न दे," मुल्ला ने कहा : "अंत में मैं माफी मांग लेता हूं।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन दैनिक पत्र के दफ्तर में एक विज्ञापन देने आया था। विज्ञापन में लिखा था : जो कोई उसकी पत्नी की प्रिय गुमशुदा बिल्ली को खोज निकालेगा, उसे पांच हज़ार रुपये इनाम मिलेगा।

विज्ञापन लेने वाले क्लर्क ने मुल्ला से पूछा : "पर एक बिल्ली के लिए पांच हज़ार तो अधिक हैं! क्या ख्याल है आपका?"

मुल्ला हँसने लगा और बोला : "पांच हज़ार हैं किसके पास? फिर इस बिल्ली के लिए अधिक नहीं हैं, क्योंकि इसे नदी में मैं ही डुबो आया हूं।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी उसे प्रति दिन तंग करती थी कि उन्हें एक महंगे घर में चले जाना चाहिए।

आखिर एक दिन नसरुद्दीन विजयी मुस्कान के साथ घर लौटा और बोला : "प्रिये, खुश हो जाओ। हमें अब दूसरा घर ढूंढने की जरूरत नहीं। मकान मालिक ने इसी का किराया बढ़ा दिया है।"

○ ○

परमात्मा है तुम में, यह याद दिलाने से भी क्या होगा?

मुल्ला नसरुद्दीन सो रहा था मजे से कि घर में चोर घुस आये। पत्नी ने मुल्ला को जागाया तो मुल्ला एकदम से चिल्ला कर बोला : "अरे कोई मर्द का बच्चा हो तो दौड़ना।"

यह सुन मुल्ला की पत्नी बोली : "मुल्ला, तुम भी तो मर्द के बच्चे हो।"

नसरुद्दीन ने कुछ सोचा और फिर पड़े-पड़े ही बहुत उदासी से बोला : "यह तो मैं भूल ही गया था। खूब याद दिलाई। अच्छा जरा चादर उढ़ा दे।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन एक भोजनालय में गया और उसने खाने के लिए खीर मंगवाई। नौकर ने जैसे ही खीर लाकर उसके सामने रखी कि वह तुनक कर बोला : "मैं यह खीर नहीं खा सकता।"

नौकर सटपटा गया और घबराया हुआ बोला : "क्षमा करें श्रीमान्, मैं अभी प्रबन्धक को बुलाता हूं।"

प्रबंधक के आते ही मुल्ला ने सामने रखी खीर की ओर इशारा करते हुए कहा : "मैं यह खीर नहीं खा सकता।"

प्रबंधक ने तपाक से कहा : "मैं अभी पता करता हूं कि क्या बात है।" फिर नौकर की ओर मुड़ कर कहा : "जाओ फौरन रसोइये को बुलाकर लाओ।"

रसोइये से भी नसरुद्दीन ने उसी स्वर में कहा : "मैं यह खीर नहीं खा सकता।"

"लेकिन जनाब, इस में खराबी क्या है ?" रसोइये ने पूछा।

"कुछ नहीं !" मुल्ला सरलता से बोला। "लेकिन इसे खाने के लिए चमचा तो है ही नहीं।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन स्थानीय पुलिस स्टेशन में घुसा : "मेरी पत्नी गायब हो गई है।" उसने बतलाया।

"अंतिम बार आपने उसे कब देखा था ?"

"तीन महीने पहले।"

"आपकी पत्नी को खोये तीन महीने हो गए हैं और आप आज रिपोर्ट लिखाने आये हैं ?"

"बात यह है" नसरुद्दीन बोला, "कि आज तक मुझे इस बात पर विश्वास करने का साहस ही नहीं हो रहा था।"

○ ○

संसार तो दर्पण है। और उसमें हम घूम-घूम कर बस स्वयं को ही पाते रहते हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन के लड़के का बताशा पानी के घड़े में गिर कर घुल गया। घड़े में झांक कर देखने पर उसने घड़े में अपनी ही परछाई देखी। वह समझा कि घड़े में कोई आदमी है। और इसी ने मेरा बताशा खा लिया है। फिर वह लगा मुल्ला को पुकारने : "अब्बा, अब्बा, इस घड़े के आदमी ने मेरा बताशा खा लिया है।"

मुल्ला ने भी जो आकर घड़े में देखा तो अपनी दाढ़ी भरे चेहरे की परछाईं देखकर बोला : "वाह बड़े मियां ! लड़कों से भी ऐसी हँसी की जाती है ?"

○ ○

दिन गीला था और मुल्ला नसरुद्दीन की दोनों लड़कियां बाहर जाकर खेलना चाहती थीं। मुल्ला ने उनसे कहा : "मेरी ओर से तुम्हें हां है। पर यदि तुम बाहर जाना ही चाहती हो तो मां के पास जाकर कहना कि पिताजी मना कर रहे हैं।"

○ ○
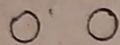
मुल्ला नसरुद्दीन ने कभी भी बीमा करवाने के पक्ष में नहीं सोचा। मुल्ला के विचार में जीवन का बीमा करवाना जीवन को कम करना था। मगर जब मुल्ला का एक मित्र उसके पीछे ही पड़ गया, तो पीछा छुड़ाने के लिए ही उसने उसकी बात मान ली और कहा : "अच्छा मैं अपने वकील की राय लूंगा।"

मित्र प्रसन्न हो बोला : "और अगर तुम्हारे वकील ने बीमा करवाने के पक्ष में राय दे दी तो ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "तो मैं अपना वकील बदल दूंगा।"

○ ○
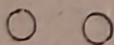
न मुल्ला नसरुद्दीन को, और न ही मुल्ला के नौकर महमूद को ही याद आ रहा था कि पिछले सालों में कोई दिन ऐसा भी गया है कि सवेरे से एक भी बीमार मुल्ला के पास न आया हो। दोनों के पल-पल घंटों के समान बीत रहे थे। फिर दोपहर भी बीत गई। फिर सांझ भी। और फिर रात भी आधी चली गई। मुल्ला ने नौकर से कहा : "जा, बाहर का दरवाजा बंद कर आ। अब सोने के सिवाय कोई उपाय नहीं है।" लेकिन नौकर क्षण भर में ही वापस आ गया और बोला, "मुल्ला, बाहर का दरवाजा तो बन्द ही है।"

○ ○
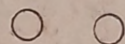
एक स्त्री को अपने रुग्ण होने का संदेह हो गया था। वह मुल्ला नसरुद्दीन के पास गई।

मुल्ला ने उसे देख कर गंभीरता से पूछा : "सचमुच ही तुम भयंकर व्याधि से ग्रस्त हो। मैं अभी परीक्षा करता हूं। इधर आओ और इस मेज के सामने खड़ी हो जाओ।"

औरत उस मेज के सामने खड़ी हो गई।

"अब अपने दायें पैर को मेज पर रखो।"

औरत ने ऐसा ही किया।

"अब बायां पैर भी रखो।"

औरत ने ऐसा करने की कोशिश की और धड़ाम से जमीन पर गिर गई।

मुल्ला बोला : "देखो, मैं पहले ही कहता था न कि तुम भयकर व्याधि से ग्रस्त हो ! कितने समय से तुम्हें इस तरह की मूर्च्छा आती है कि तुम खड़े-खड़े ही जमीन पर गिर जाती हो ।"

○ ○
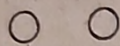
आदमी की बेईमानी का कोई अंत नहीं है । परमात्मा के साथ भी वह बेईमानी में कोई क़सर नहीं रखता है ।

मुल्ला नसरुद्दीन नदी में स्नान कर रहा था । स्नान से पहले उसने कहा : "या ख़ुदा ! यदि मुझे एक रुपया मिल जाये तो तेरे नाम पर दो आने की शीरनी चढ़ाऊं ।"

संयोग की बात कि घर लौटते समय उसे राह में एक रुपया मिल गया । मुल्ला रुपया लेकर बड़ा चिंतित बाजार पहुंचा । चिंता थी कि अब दो आने की शीरनी चढ़ानी पड़ेगी । उसने बहुत कोशिश की फिर भी रुपया घिसा-पिटा था और इसलिए चौदह आने में ही चला । तब नसरुद्दीन खूब प्रसन्न होकर बोला : "या ख़ुदा ! तू भी एक ही चालाक निकला, अपने दो आने पहले ही काट लिये ।"

○ ○
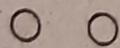
ठिठुराने वाले जाड़े में मुल्ला नसरुद्दीन को एक पुराने मरीज के घर बुलाया गया । घुसते ही मरीज को रोती हुई पत्नी ने उसका स्वागत किया : "मुझे डर है मुल्ला कि अब वे अच्छे नहीं होंगे," वह बोली : "लेकिन, देखिये उन्हें इस बात का पता न लगने दीजिये ।"

"हां, हां, कह कर मुल्ला ने उसे सांत्वना दी और वह मरीज के कमरे में पहुंचा । वहां उसने मरीज की अच्छी तरह जांच की और फिर मुस्कुराते हुए बोला : "मेरे विचार से चार दिन बिस्तर पर, एक सप्ताह का आराम और फिर तुम कूदते-फांदते नजर आओगे ।" लेकिन मरीज की निगाह बचा कर उसने मरीज की पत्नी की ओर निराशा में सिर हिला दिया ।

उसी पल नौकरानी कोयलों की अंगीठी लेकर कमरे में घुसी । वह द्वार बंद करना भूल गई और हड्डी कंपानेवाली हवा का झोंका कमरे में फैल गया ।

"किवाड़ बंद कर, नसरुद्दीन चीखा : "क्या इनके साथ हमें भी स्वर्ग भेजना चाह रही है ?"

○ ○
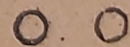
चुनाव का दिन निकट आ गया था और मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी का नाम मतदाताओं की फेहरिस्त में नहीं निकला तो वह बहुत भिन्नाई। मुल्ला ने उसे बहुत समझाया, पर उसने एक न मानी तो मुल्ला को उसे लेकर बड़े चुनाव अधिकारी के पास जाना ही पड़ा। चुनाव-अधिकारी ने जांच-पड़ताल की और कहा : "माफ कीजियेगा, पर आपका नाम तो सरकारी फेहरिस्त में मरे हुए व्यक्तियों की सूची में है।"

"क्या ?" मुल्ला की पत्नी चीखी, "मैं इतनी बड़ी जिन्दा खड़ी हूं और..."

तभी नसरुद्दीन ने अपनी पत्नी को डांटा और कहा : "क्या जबान लड़ा रही हो, इतने बड़े अधिकारी क्या झूठ बोलेंगे।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन एक शराब-घर में गया और बियर का एक गिलास मांगा। आधा गिलास पी कर बाकी उसने शराबघर के मालिक पर फेंक दिया। और फिर वह बहुत पछताया और उसने बहुत माफी मांगी।

"यह कुछ मानसिक दुर्बलता है" वह बोला : "मुझे बड़ी लज्जा अनुभव होती है।"

"आप किसी मनोविश्लेषक के पास जायें।" शराबघर के मालिक ने सहानुभूति से सलाह दी।

कई मास बाद मुल्ला फिर उसी शराबघर में घुसा और फिर उसने वही काम दुहराया। इस बार स्वाभाविक ही था कि मालिक बहुत लाल-पीला हो गया।

"मुझे ख्याल है कि मैंने आपको किसी मनोवैज्ञानिक की सलाह लेने के लिए कहा था।" वह गुर्राया।

मुल्ला ने कहा : "मैं एक के पास जा रहा हूं।"

"लेकिन ऐसे इलाज से क्या फायदा ?" मालिक ने कुछ ढीला पड़कर पूछा।

"वाह, फायदा क्यों नहीं है।" नसरुद्दीन बोला, "अब मैं बिलकुल ही लज्जित नहीं होता हूं।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन से किसी ने पूछा : सफलता का रहस्य क्या है ?"

"सही निर्णय पर काम करना," नसरुद्दीन ने कहा ।

"लेकिन सही निर्णय किये कैसे जाते हैं ?"

"अनुभवों के आधार पर ।"

"और अनुभव किस प्रकार प्राप्त होते हैं ?"

नसरुद्दीन ने कुछ सोचा और फिर कहा—"गलत निर्णयों पर काम करके ।"

○ ○
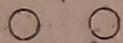
मरीज बोला : "मुल्ला, मुझे कहते हुए दुख होता है, किन्तु मेरी पत्नी सोचती है कि आप मेरे इलाज की जो फीस ले रहे हैं वह काफी अधिक है ।"

"लेकिन जनाब," पूछा मुल्ला नसरुद्दीन ने, "क्या आप भी अपने जीवन का मूल्य अपनी पत्नी की तरह ही कम लगाते हैं ?"

○ ○
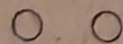
मंदिरों में खड़े लोगों को देख कर यह मत समझ लेना कि वे परमात्मा को ही खोजने के लिए वहां गये हैं ।

मुल्ला नसरुद्दीन के गांव में एक हाथी बिकने आया । मुल्ला ने पहले कभी हाथी नहीं देखा था । वह भी हाथी देखने बाजार में पहुंचा ।

वह कभी हाथी की सूंड़ की ओर जाकर देखता और कभी पूंछ की ओर । हाथी वाला समझा कि यह बड़ा पारखी है, और ऐसा न हो कि कोई ऐब ढूंढ़ निकाले और हाथी न बिके । सो उसने चुपचाप सौ रुपये की थैली निकाली और मुल्ला को दे दी ।

मुल्ला थैली घर रख आया और आकर फिर वैसा ही करने लगा । हाथी वाले ने डर कर फिर सौ रुपये की थैली दे दी ।

लेकिन मुल्ला थैली रख कर पुनः लौट आया और लगा हाथी के चारों ओर चक्कर काटने । तब तो हाथी वाले ने झुंझलाकर उससे कहा : "बताओ तो कौन सा ऐब ढूंढ़ रहे हो ?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, "मैं जानना चाहता हूं कि इसका मुंह किधर है ?"

○ ○
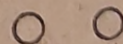
मुल्ला नसरुद्दीन दवा तैयार करने भीतर गया था। एक बीमार कवि अकेला ही बैठकखाने में बैठा था। मुल्ला की पत्नी उसी बीच किसी काम से बैठकखाने में गई। मुल्ला ने तभी और की आवाज सुनी तो वह भागा हुआ बाहर गया।

उसने देखा कि कवि आंखें मूंदे बोल रहा है : "आह !... किसी रूपसी के अंगुलि स्पर्श से मेरे रोग का विष उतर गया है मेरे मन में ज्योति जगी है, मेरा अंग-अंग निरोग होकर मतवाले की तरह झूम रहा है...।"

"ठीक है, ठीक है, नाटक मत करो," नसरुद्दीन ने कहा, "मैंने मेरी पत्नी के द्वारा तमाचा मारे जाने की आवाज भली भांति सुन ली है।"

○ ○

एक अधेड़ अवस्था की स्त्री मुल्ला नसरुद्दीन के पास पहुंची और बोली : "मुल्ला, अपनी किसी दवा से मेरा चेहरा सुन्दर बना दीजिए और बताइये कि आपकी फीस क्या होगी ?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने स्त्री का चेहरा गौर से देखा और कहा : "कार्य अति कठिन है। भगवान् से ही टक्कर लेनी है। फिर भी मैं कोशिश करूंगा। हां, फीस होगी पांच हजार रुपये।"

स्त्री आश्चर्य से बोली : "मुल्ला, यह तो बहुत ज्यादा है। कोई सस्ता नुस्खा नहीं है ?"

मुल्ला बोला : "है क्यों नहीं ? है। आप घूंघट काढ़ना शुरू कर दीजिये।

○ ○

रोगी ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा : "मुल्ला, सच-सच बताओ, मेरे अच्छे होने की क्या सम्भावना है ?"

"शत-प्रतिशत" नसरुद्दीन ने कहा : "आंकड़ों से पता चलता है कि इस रोग में से नौ रोगियों की मृत्यु हो जाती है। मेरे इलाज से नौ रोगी इस रोग से पहले ही मर चुके हैं। आप दसवें हैं।"

○ ○

"मुल्ला नसरुद्दीन ने लाटरी के एक-एक रुपये वाले दो टिकिट मोल लिए जिनमें से एक पर उसे एक लाख रुपये का इनाम मिला। लेकिन जब उसके मित्र उसे बधाई देने आये तो वह बेहद उदास बैठा हुआ था।

कारण पूछने पर उसने कहा, "पता नहीं, मैंने दूसरे टिकिट पर पैसे क्यों बरबाद किये। इनाम तो एक पर ही मिल जाता।"

○ ○
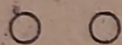
हवा जोर से आने के कारण, जहाज की रेलिंग पर खड़ी हुई एक लड़की समुद्र में गिर पड़ी। उसके गिरते ही पानी में छपाक् से एक व्यक्ति और कूदा तथा सहायता पहुंचने तक पानी में उस लड़की को सम्हाले रहा। बाहर निकाले जाने पर सबने आश्चर्य से देखा कि वह व्यक्ति है, मुल्ला नसरुद्दीन—जहाज के यात्रियों में सबसे वृद्ध व्यक्ति! सबने मुल्ला के साहस की प्रशंसा की तथा जहाज के कैप्टेन ने उसके सम्मान में एक भोज दिया। भोजनोपरान्त सबने मुल्ला नसरुद्दीन से कुछ कहने को कहा। नसरुद्दीन नें खड़े होकर कहा: "मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि मुझे धक्का किसने दिया था?"

○ ○
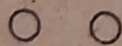
"मुल्ला" एक रोगी महिला ने कहा, "मुझे कुछ हरारत महसूस हो रही है, दवा दे दीजिये।"

नब्ज देखने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन बोला: "कोई खास बात नहीं है। आपको बस थोड़ा आराम चाहिये। थकान है, मिट जाएगी।"

लेकिन महिला के चित्त को इससे शांति नहीं मिली और वह बोली: "मेरी जबान भी देख लीजिये।"

मुल्ला ने चुपचाप उसकी जबान भी देख ली और फिर शांतिपूर्वक कहा, "उसे भी आराम की जरूरत है।"

○ ○
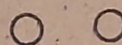
मरीज: "मुल्ला! मुझे बहुत पीड़ा हो रही है। मैं उसे सहन नहीं कर सकता और मैं मरना चाहता हूं।"

मुल्ला नसरुद्दीन: "तुमने बहुत अच्छा किया जो मुझे बुलवा भेजा।"

○ ○
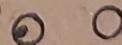
मरीज मुल्ला नसरुद्दीन के यहां काफी अरसे के बाद आया था।

"मैंने आपको बहुत दिनों से इधर नहीं देखा," नसरुद्दीन बोला: "क्यों? क्या तबीयत खराब थी?"

○ ○

सौ वर्ष तक जीने की कामना करने वाले एक रोगी को मुल्ला नसरुद्दीन ने सलाह दी कि वह शराब पीने, धूम्रपान करने और स्त्रियों के पीछे घूमने की आदतें छोड़ दें।

"मुल्ला, तब क्या मैं निश्चय ही सौ वर्ष का हो सकूंगा?" रोगी ने अति उत्सुकता से पूछा।

"नहीं," नसरुद्दीन ने उत्तर दिया, "मगर अपने आपको सौ वर्ष का महसूस करने लगोगे।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन कह रहा था काफी-हाउस में: "विज्ञान की प्रगति के क्या कहने? विज्ञान दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। शीघ्र ही एक ऐसा तेजाब खोजा जा रहा है जो हर चीज को—मोम, लकड़ी, शीशा, प्लास्टिक, लोहा अर्थात सभी वस्तुओं और धातुओं को गलाने में समर्थ होगा।"

लेकिन तभी एक अविश्वासी ने पूछा: "लेकिन मुल्ला, उस तेजाब को रखेंगे किस चीज में?"

नसरुद्दीन गम्भीरता से बोला: "इस के बारे में बाद में खोज की जायेगी?"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन जेल में बैठा हुआ अपने साथियों से शेखी बघार रहा था कि अब तक के जीवन में उसने वह सब कुछ किया है जो नहीं करना चाहिए था। "लेकिन अगले माह की दस तारीख से मैं यह काम सदा के लिए छोड़ रहा हूं।"

"क्यों?" एक ने पूछा।

"क्योंकि," मुल्ला नसरुद्दीन ने अत्यन्त गम्भीरता से ठहरते-ठहरते कहा, "क्योंकि, उस दिन मुझे फांसी लगनेवाली है।"

○ ○

सांत्वनाओं का संबन्ध सत्य से कुछ भी नहीं है। इसलिए जो सांत्वना ही खोजता है, वह सत्य नहीं खोज पाता है।

मृत्यु की भयंकरता पर बहुत देर तक व्याख्यान झाड़ने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: "परमात्मा की कैसी अपार दया है कि मृत्यु सदा जीवन के अंत में ही आक्रमण करती है। यदि मृत्यु जीवन के आरम्भ में या मध्य में होती तो हम लोगों को कैसा कष्ट उठाना पड़ता ?"

मुल्ला नसरुद्दीन के जो श्रोता मृत्यु की भयंकरता से अति भयभीत हो उठे थे, वे इस वक्तव्य से अति शांत होकर अपने घरों को लौटे।

क्या आप भी इन श्रोताओं में से एक नहीं हैं ?

○ ○
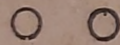
"मुल्ला, मेरा सिर बहुत जोर से दुखा करता है, कोई इलाज बताइये।"

"क्या आप सिगरेट बहुत पीते हैं ?" मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा।

"नहीं, मैं तम्बाखू को हाथ तक नहीं लगाता, शराब नहीं पीता और सब काम नियमित समय पर करता हूं। अपने जीवन में मैंने धर्मशास्त्रों में की गई किसी भी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया है।"

"तब आपकी बीमारी का एक ही कारण हो सकता है," नसरुद्दीन बोला, "कि अपनी दुर्व्यसनहीनता के गर्व से आपका सिर फिर गया है।"

○ ○
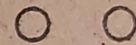
मुल्ला नसरुद्दीन को मृत्युदण्ड का समाचार सुनाने जेलर उसकी कोठरी में पहुंचा।

मुल्ला ने शांति से मृत्युदण्ड की खबर सुनी और फिर कहा: "क्या फांसी मुझे आप अगले शनिवार को नहीं दे सकते हैं ?"

"क्यों, इस सोमवार में क्या बुराई है ?" जेलर ने पूछा।

"ओह, ऐसे तो कुछ भी नहीं," नसरुद्दीन ने कहा, "बस यही कि मैं सप्ताह का प्रारम्भ इस बदकिस्मती से नहीं करना चाहता हूं।"

○ ○
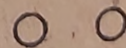
एक आदमी मुल्ला नसरुद्दीन के पास आया। "मुल्ला", उसने कहा, "मुझे बहुत जोर का जुकाम और सर्दी है।"

मुल्ला बोला : "जाकर झील के बर्फीले ठंडे पानी में स्नान कर के उघाड़े बदन खुली हवा में घंटे भर बैठे रहो।"

उस आदमी ने हैरानी से पूछा: "क्या इससे मेरा जुकाम और सर्दी ठीक हो जायेगी ?"

मुल्ला बोला: "नहीं मुझे खेद है कि सर्दी की मेरे पास कोई दवाई नहीं है। लेकिन यदि आपको निमोनिया हो जाए तो उसकी रामबाण दवा मेरे पास है।"

○ ○
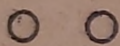
जज : "नसरुद्दीन, तुम कहते हो कि तुम शांतिप्रिय जीव हो ?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "जी हुजूर जरूर हूं।"

जज : "और फिर भी तुमने अपनी पत्नी को जहरीले तीर से बेधकर मार डाला ?"

नसरुद्दीन : "सच बात है। हुजूर और मर जाने के बाद, सरकार, उसकी-सी शांत छवि मैंने कहीं नहीं देखी।"

○ ○
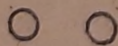
सावधानी का तो अभ्यास चाहिए।

प्रतिपल।

तभी समय पर यह काम आ सकती है।

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन सिर झुकाये बड़ी तेजी से पांव बढ़ाता जा रहा था। किसी ने पूछा, "नसरुद्दीन, यह क्या मामला है ? इस प्रकार सिर झुका कर कहां तशरीफ ले जा रहे हैं।

मुल्ला ने अत्यन्त गंभीरता से कहा : "एक मित्र के घर जा रहा हूं। और मालूम नहीं कब कैसा ख्याल रहता है। जिनके घर जा रहा हूं उनका दरवाजा बहुत छोटा है। और समय पर ख्याल न रहा तो खोपड़ी गंजी हुई न ? इसीलिये पहले से ही सावधानीपूर्वक जा रहा हूं।"

○ ○
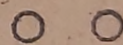
एक पार्टी में मुल्ला नसरुद्दीन की भेंट मनोविज्ञान के एक प्रसिद्ध पंडित से हुई। मुल्ला ने उस मनोवैज्ञानिक से पूछा : "प्रोफेसर साहब, यह बताइये कि किसी की बुद्धि की परीक्षा कैसे ली जाती है ? देखिये कोई आसान सा तरीका बताइये।"

"आप उससे एक सीधा-सादा सवाल पूछ लीजिए, यदि वह फौरन जवाब न दे सके तो समझ लीजिये उसमें अक्ल की कमी है।"

"किस प्रकार का प्रश्न ?" मुल्ला ने पूछा।

"जैसे आप पूछ सकते हैं कि कर्नल बर्ड ने तीन बार हवाई जहाज से पृथ्वी को बिना कहीं रुके परिक्रमायें कीं और उनमें से एक में वह मारा गया। बताइये कौन सी उड़ान में वह मारा गया ?"

मुल्ला कुछ देर खामोश रहा और फिर बड़ी झिझक के साथ बोला : "सच कहें तो प्रोफेसर साहब, मुझे खुद ही नहीं मालूम कि कर्नल बर्ड किस उड़ान में मारा गया। फिर इतिहास का ज्ञान हुये बिना यह मालूम भी कैसे हो सकता है ?"

○ ○

"मुल्ला," रोगी बोला, "मेरे बेटे को छूत की बीमारी—स्कारलेट फीवर है और वह मानता है कि उसने घर की नौकरानी को चूमा है।"

"आप घबराइये नहीं," वृद्ध मुल्ला नसरुद्दीन ने सलाह दी। "जवानी में खून जोश मारता ही है। युवक आखिर युवक ही रहेंगे।"

"आप समझे नहीं, मुल्ला," रोगी बिलखा। "सच्ची बात यह है कि उसके बाद मैं भी उस लड़की को चूम चुका हूं।"

"तब तो मामला कुछ गड़बड़ नजर आ रहा है," नसरुद्दीन ने हामी भरी।

"अभी क्या गड़बड़ है, मुल्ला, उसके बाद मैं तो अपनी पत्नी को भी दो बार चूम चुका हूं।"

यह सुनते ही नसरुद्दीन अपनी कुर्सी से उछल कर चिल्लाया : "मारे गये—तब तो यह वाहियात रोग मुझे भी लग गया होगा।"

○ ○

एक सभा में धर्मगुरु ने कहा : "मुझे मालूम है नाम उस पुरुष का जो दूसरे आदमी की स्त्री से प्रेम करता है। अगर वह दान-पात्र में आज पांच रुपये का नोट नहीं डालेगा, तो कल उसका नाम बता दिया जायेगा।"

उस दिन दान-पात्र में बीस पांच-पांच रुपये के नोट थे, तथा एक दो रुपये के नोट के साथ यह पर्चा लगा हुआ था : "बाकी तीन पहली तारीख को तनखा मिलने पर—मुल्ला नसरुद्दीन।"

और उस दिन सभा में आये कुल लोगों की संख्या भी २१ ही थी।

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन से जज ने पूछा : 'नसरुद्दीन, तुम पर आरोप भी है कि तुम शादी के पन्द्रह दिन बाद ही अपनी पत्नी को छोड़कर अचानक भाग गये थे। अपने बचाव में तुम्हें क्या कहना है।"

"बचाव !" नसरुद्दीन बोला। "यदि मैं अपना बचाव ही करने में समर्थ होता तो घर छोड़कर भागता ही क्यों ?

○ ○

जो नहीं जानता है स्वयं को वह दूसरों को कैसे जान सकता है।

मुल्ला नसरुद्दीन के मकान के पीछे ही था एक मदिरालय। एक बार उसमें एक लाश मिली, जिसका सिर कोई काट ले गया था। जब पुलिस तहकीकात करने आई, तब उसने मुल्ला नसरुद्दीन को भी पहचानने के लिए बुलाया। मुल्ला ने लाश का बहुत निरीक्षण किया और तब बोला : "मैं इसे भली भांति पहचानता हूं क्योंकि यह हमेशा मदिरालय में शराब पीने आया करता था," और तब मुल्ला ने अचानक अपने सिर को ठीक से टटोला और फिर मदिरालय में लगे दर्पण में जाकर स्वयं को गौर से देखा और कहा : "लेकिन मैं यह नहीं कह सकता कि इसके सिर था या नहीं, क्योंकि आज के पूर्व मुझे स्वयं के सिर का भी कोई पता नहीं था।"

○ ○

रोगी : "मुल्ला, मैं कौन-कौन सी चीजें खा सकता हूं ?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "खट्टी और चटपटी चीजें छोड़कर बाकी सब खा सकते हैं।"

रोगी : "फल खा सकता हूं ?"

नसरुद्दीन : "जी हां।"

रोगी : "मिठाई खा सकता हूं ?"

नसरुद्दीन : "जी हां।"

रोगी : "मूंग की खिचड़ी ?"

नसरुद्दीन : "जी हां।"

रोगी : "केले भी खा सकता हूं।"

नसरुद्दीन : "जी"

रोगी : "और अंगूर ?"

नसरुद्दीन : "जी जनाब, मेरा सिर छोड़कर और सब कुछ खाइये।"

○ ○

जज : "नसरुद्दीन, तुम इस बात को स्वीकार करते हो कि रात को दो बजे पिछले दरवाजे के रास्ते से तुम वादी के मकान में घुस गये। मैं पूछता हूं कि वहां तुम्हारा उस वक्त क्या काम था ?"

मुल्ला नसरुद्दीन : "सरकार मैंने समझा था कि वह मेरा घर है।"

जज : "तो जब वादी की स्त्री तुम्हारे सामने आई तब तुम भागे क्यों ? तुम खिड़की से कूद नीचेवाले खंड में क्यों आये और गुसलखाने में क्यों छिपे ?"

नसरुद्दीन : "सरकार, मैंने समझा कि वह मेरी स्त्री है।"

○ ○

"क्या तुम अपना कुत्ता बेचने की कृपा करोगे, नसरुद्दीन ?" पड़ोसी ने पूछा मुल्ला नसरुद्दीन से, "कल मेरी पत्नी को गाने का अभ्यास रोक देना पड़ा, क्योंकि वह पूरे समय गुर्राता रहा।"

"माफ कीजिये," कहा नसरुद्दीन ने, "शुरुआत सदा आपकी पत्नी ही करती हैं।"

○ ○

एक दिन काफी हाऊस में मुल्ला नसरुद्दीन कह रहा था : "औरतों को यदि कोई कब्जे में रखना चाहे तो मुझसे सीखे। मुझे एक ऐसा मंत्र मालूम है कि जिसे जपते ही कैसी ही लड़ाकू औरत क्यों न हो एकदम दुम दबा कर काबू में हो जाती है।"

एक मित्र ने बीच में ही रोक कर कहा : "लेकिन नसरुद्दीन फिर तुम्हारी खुद की बीबी तुम्हारे काबू में क्यों नहीं है ?"

नसरुद्दीन बोला : "क्या करूं ? उसके मारे तो मैं तंग आ गया हूं। वह मुझे मंत्र जपने की फुरसत ही नहीं देती।"

क्या सभी मंत्र जानने वालों की यही हालत नहीं है ?

○ ○
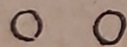
मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी, दोनों ही तलाक के लिए जिद्द में थे। जज ने पूरी कोशिश की कि दोनों में कोई समझौता हो जाये, लेकिन वे दोनों एक-दूसरे का मुंह देखने के लिए भी राजी नहीं थे।

"अच्छा, तो मैं तलाक की कार्यवाही पूरी कर देता हूं, नसरुद्दीन," जज ने कहा, "लेकिन जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह बराबर बंट जायेगा।"

"हमारे सात बच्चों का क्या होगा ?" पत्नी ने चिंतित होकर पूछा।

"उन्हें बांटने की तुम्हीं लोग कोई राह सुझाओ," जज ने कहा।

मुल्ला तत्काल निश्चय पर पहुंच गया। वह पत्नी के पास जा हाथ खींचता हुआ बोला : "चलो, घर चलो। अब हम अगले साल अदालत में आयेंगे, जब हमारे आठ बच्चे हो जायेंगे।"

○ ○
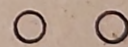
"मुल्ला, जब मैं सोकर उठता हूं, तो आधा घंटे तक घुमेरी अनुभव करता हूं और उसके बाद ठीक हो जाता हूं। आप बताइये मैं क्या करूं ?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने बहुत सोचा-विचारा। फिर कहा : "आप आधा घंटे बाद ही उठा करिये।"

○ ○
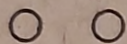
मुल्ला नसरुद्दीन अचानक ही सड़क पर खड़ा हो किसी अजनबी आदमी को घूरने लगा। उस आदमी ने परेशान हो पूछा : "आप क्या देख रहे हैं ?"

मुल्ला ने कहा : "अगर मूछों का फर्क न होता तो तुम्हारी शक्ल बिलकुल मेरी पत्नी से मिलती।"

"परन्तु मेरे तो मूछें नहीं हैं।" उस आदमी ने कहा।

नसरुद्दीन ने कहा : "वही तो मैं गौर कर रहा हूं। मेरी पत्नी के हैं।"

○ ○
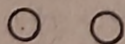
"मुल्ला, आखिर तुम इतने परेशान क्यों हो ?" एक मित्र ने पूछा मुल्ला नसरुद्दीन से, जो कि काफी हाउस में बड़ी देर से अत्यंत चिन्तामग्न बैठा था।

"रात मैंने एक सपना देखा है." मुल्ला ने कहा : "सपने में मैंने देखा कि मेरी पत्नी किसी अन्य पुरुष के साथ गुलछर्रे उड़ा रही है।"

"लेकिन इसमें परेशान होने की क्या बात है ?" मित्र ने कहा, "ऐसे सपनों में बेवकूफी के सिवा कुछ नहीं होता।"

"तुम भी क्या बातें करते हो ?" मुल्ला बहुत नाराज हुआ, "जब मेरे सपनों में वह ऐसी हरकतें करती है, तो अपने सपनों में क्या नहीं करती होगी ?"

○ ○
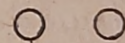
"क्यों महानुभाव, क्या यह आपका ही बच्चा है जो मेरा कोट बालू में गाड़ रहा है ?" समुद्र किनारे खड़े मुल्ला नसरुद्दीन से एक सज्जन ने अत्यंत तीखे स्वर में पूछा।

"जी नहीं, वह तो मेरा भतीजा है," मुल्ला ने अत्यंत नम्रतापूर्वक कह कर दूसरी ओर इशारा किया, "मेरा बच्चा तो वह रहा जो आपके जूतों में पानी भर रहा है।"

○ ○
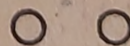
आपके संकल्प संकल्प ही कहां हैं ?

आत्मवंचना ही तो संकल्प नहीं है ?

मुल्ला नसरुद्दीन गया था तीर्थ को। वहां उसने संकल्प किया—आज से मछलियां नहीं खाऊंगा, लेकिन घर आकर पहले दिन ही उसने कहा अपनी पत्नी से मछलियों का शोरबा बनाने को। ऐसे उसे मछलियां बहुत पसंद न थीं और इसीलिए संकल्प कर के फंसा भी था लेकिन संकल्प के बाद से ही मछलियां उसका पीछा करने लगीं और उनके स्वप्न भी उसे अति स्वादिष्ट लगने लगे थे।

पत्नी ने मछलियों का नाम सुना तो बोली: "अरे ! कहते क्या हो ? तुम तो उन्हें तीर्थ में न खाने का संकल्प कर आये हो ?" पर मुल्ला बोला "अरी पगली, मछलियां छोड़ने की कसम खाई है, कुछ उनका शोरबा छोड़ने की कसम तो खाई नहीं है।"

तब स्त्री ने शोरबा बनाया। लेकिन परोसते समय उसने कटोरे के किनारे हाथ लगा लिये जिससे कि कतरे न गिर पड़ें। इससे नसरुद्दीन बहुत नाराज हुआ और बोला : 'अरी हाथ से क्यों रोकती है, जो अपनी तबियत से आवें उन्हें आने दे। कुछ इस रोका-छेकी का संकल्प तो किया नहीं है।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी दाँत के डाक्टर की दुकान पर पहुंचे।

"मैं एक दांत उखड़वाना चाहता हूं, और देखिए सुन्न करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि हमें जरा जल्दी है। बस, जल्दी से दाँत निकाल दीजिए।"

नसरुद्दीन की बहादुरी से डाक्टर चकित हुआ। उसने कहा,

"आप बड़े हिम्मतवर हैं, कौन सा दांत है ?"

मुल्ला पीछे मुड़ा और पत्नी से बोला : "चलो, आगे बढ़कर दांत दिखा दो।"

○ ○

"आपको दाल में नमक ज्यादा तो नहीं लग रहा है ?"

"नहीं," मुल्ला नसरुद्दीन बोला, "बिलकुल नहीं। नमक तो ठीक है, पर नमक के हिसाब से दाल कम है।

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन जब अपने विचारों में मग्न होता था, तो वह किसी तरह का व्याघात पसन्द नहीं करता था। और कोई उसकी मग्नता में बाधा पहुँचाता तो वह बुरी तरह बरस पड़ता था। एक रात उसकी पत्नी सिनेमा का अंतिम शो देख कर बड़ी देर से लौटी। उस समय मुल्ला अपने विचारों में मस्त था। वह चुपके से अपने कमरे में चली गई, पर वहां अपनी सारी पेटियां खुली देख कर एका-एक चिल्ला पड़ी, "अरे, सुनते हो, मैं तो लुट गई, चोर सब कुछ लेकर भाग गया है......"

उसकी चिल्लाहट सुन मुल्ला का माथा गर्म हो उठा और कमरे में आकर वह झल्लाकर बोला : "बदतमीज औरत, जब चोर भी मेरा ख्याल रखते हुए इतनी शांति रख सका, तो क्या तू नहीं रख सकती ?"

○ ○

"आ जाओ, आ जाओ। कुत्ते से डरो नहीं !" मुल्ला नसरुद्दीन ने घर आये मेहमान से कहा।

"क्यों, क्या यह काटता नहीं ?"

"यही तो मैं भी देखना चाहता हूं," मुल्ला बोला, "मैं इसे आज ही खरीदकर लाया हूं।"

○ ○

अहंकार स्वयं को कैसे भी भर लेता है।

झूठे हीरों से।

नकली जीतों से।

सपनों में हुई सफलताओं से।

एक शिकारी पार्टी के कप्तान ने अपनी पार्टी में आये हुए नये सदस्य मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा : "क्या तुमने कभी किसी जंगली जानवर को मारा है ?"

मुल्ला बोला : "जी हाँ, मैंने एक बार एक शेर की गर्दन दोनों हाथों से मरोड़ कर फेंक दी थी। एक हाथी की सूंड़ एक झटके में उखाड़ दी थी और एक चीते तथा रीछ के पैर तोड़ डाले थे।"

कप्तान ने आश्चर्य से पूछा : "फिर क्या हुआ ?"

नसरुद्दीन ने गंभीरता से कहा : "जो होना था वही हुआ। मेरी जान मुश्किल से बची। खिलौनों के दुकानदार ने मुझे धक्के देकर दुकान से बाहर निकाल दिया था।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन को यकायक शराब छोड़ते सुनकर उसके मित्रों को बड़ा अचम्भा हुआ।

उन्होंने पूछा : "मुल्ला, तुमने यह प्रण क्यों लिया ?"

नसरुद्दीन ने कहा, "मैं एक पत्नी से ही काफी परेशान हूं इसलिए।"

लेकिन मित्र कुछ समझे नहीं। बोले, "एक पत्नी या ज्यादा पत्नियों से शराब का क्या संबंध ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "मैं जब भी पीता हूं, तब एक की जगह तीन-तीन पत्नियां दिखाई पड़ने लगती हैं।"

○ ○
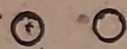
मुल्ला नसरुद्दीन सृष्टि के निर्माण की कहानी सुना रहा था। एक छोटा बच्चा जो कि एक विचारक का पुत्र था, खड़ा होकर बोला : "लेकिन मेरे पिताजी तो कहते हैं कि हम सब बन्दर की संतान हैं।"

"मेरे बच्चे," कहा नसरुद्दीन ने, "मुझे तुम्हारे परिवार के निजी मामलों से क्या लेना-देना, मैं तो सारी दुनिया की बात कर रहा हूं।"

○ ○
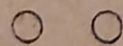
मुल्ला नसरुद्दीन की बैठक के सामने से निकलते हुए उसके मित्र शेख फरीद ने अंदर बड़ी भयंकर बहस की आवाज सुनी। घबरा कर वह अन्दर पहुंचा। अंदर धर्मशास्त्रों के बीच में घिरा हुआ नसरुद्दीन बैठा था।

"नसरुद्दीन, तुम किससे बहस कर रहे थे ?" उसने पूछा : "तुम तो अकेले हो ?"

"आज किसी बकवासी के न आने के कारण मैं ऊब गया था, इसलिए अपने आप से बातें कर रहा था," नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

"यह तो माना कि तुम अपने आप से बातें कर रहे होंगे," फरीद ने कहा, 'लेकिन इसमें बहस का क्या सवाल था ?"

"क्यों नहीं ?" नसरुद्दीन गुर्राया, "मैं बकवासियों के बोल कभी नहीं सह पाता हूं।"

○ ○
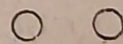
मुल्ला नसरुद्दीन और उसकी पत्नी में किसी चर्चा के दौरान तू-तू मैं-मैं हो गई। मुल्ला ने आंखें निकालते हुए कहा : "मैं कहता हूं, तुम अपने शब्द वापस लो। वरना अच्छा नहीं होगा। मैं तुम्हें पांच मिनट का समय देता हूं।"

"और यदि मैं पांच मिनट में अपने शब्द वापस न लूं तो?" पत्नी ने क्रोध से भर कर पूछा।

थोड़ी देर विचार के बाद मुल्ला बोला, "अच्छा! तो तुम कितना समय चाहती हो?"

○ ○
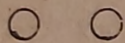
रेल की पटरी पर सोये मुल्ला नसरुद्दीन से किसी ने पूछा : "श्रीमान् आप यह क्या कर रहे हैं?"

नसरुद्दीन ने कहा : "मैं मरने आया हूं।"

"अच्छा तो बगल में रोटियां क्यों रखे हो?"

नसरुद्दीन बोला : "गाड़ी लेट भी तो हो सकती है।"

○ ○
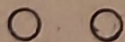
मुल्ला नसरुद्दीन की तबीयत कुछ ज्यादा ही ख़राब थी। गांव के धर्मगुरु ने उसे चेतावनी देते हुए कहा : "नसरुद्दीन, अब तुम्हें नियम से रहना पड़ेगा।"

"मैं तो हमेशा नियम से ही रहा करता हूं।" नसरुद्दीन ने कहा।

"यह तो तुम ठीक नहीं कह रहे हो," धर्मगुरु ने कहा, "क्योंकि कल ही शाम को मैंने तुम्हें एक सुन्दर लड़की के साथ पार्क में बैठे देखा था।"

"लेकिन," नसरुद्दीन बोला, "वह तो मेरा हमेशा का ही नियम है।"

○ ○
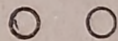
क्या मैं पूछ सकता हूं कि आपकी उम्र कितनी है?

मुल्ला नसरुद्दीन सत्तर वर्ष पार कर गया था। वह बैठा था अपने छज्जे पर और सड़क की ओर झांक रहा था। एकाएक उसे एक सुन्दरी षोडशी बाला आती दिखलाई दी। मुल्ला ने हड़-बड़ाकर नौकर को आवाज दी, "महमूद! जरा मेरे दांत जल्दी से ले आओ, मैं सीटी बजाना चाहता हूं।"

○ ○
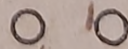
एक आदमी को फौजदारी वकील करना था। वह अपने मुहल्ले के सबसे वृद्ध व्यक्ति, मुल्ला नसरुद्दीन से सलाह लेने गया। उसने कहा मुल्ला से : "क्या आप इस मुहल्ले के सब व्यक्तियों को जानते हैं ?"

"हां-हां, क्यों नहीं ? मैं इस मुहल्ले में पचास साल से रह रहा हूं।"

"इस मुहल्ले में कोई फौजदारी वकील भी है ?"

"क्यों नहीं, सब हैं," मुल्ला बोला, "असल में जिस वकील को भी पूरी फीस नहीं मिलती, वही फौजदारी पर उतर आता है।"

"मेरा मतलब क्रिमिनल वकील से था।"

"यह तो वे सभी होते हैं," मुल्ला ने कहा, "लेकिन इसे सिद्ध करना जरा मुश्किल है।"

○ ○
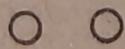
"मुल्ला, रात को ढंग से नींद न आए तो इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए ?"

"आप सोने से पहले एक गिलास गरम दूध और सेब ले लिया करें," मुल्ला नसरुद्दीन बोला।

"मगर मुल्ला, छः महीने पहले तो आपने कहा था कि मुझे सोने से पहले कुछ भी नहीं खाना चाहिए ?"

"मगर भाई," कहा नसरुद्दीन ने, "यह भी तो सोचो कि इन छः महीनों में चिकित्सा विज्ञान उन्नति करके कहां से कहां जा पहुंचा है।"

○ ○
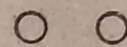
आप समस्या के अनुसार समाधान खोजते हैं या समाधान के अनुसार ही समस्या खोजते हैं ?

मुल्ला नसरुद्दीन शराब पीकर रात को लौटा। काफी देर तक वह द्वार पर खड़ा कोई चीज ढूंढ़ता रहा पर न मिल पाई। मुल्ला की खटपट सुन उसकी पत्नी जाग गई। नीचे पति को खड़े पाकर उसने पूछा : "क्या बात है ? ताली नहीं मिल रही है, तो दूसरी फेंक दूं।"

नसरुद्दीन ने लड़खड़ाते स्वरों में कहा : "ताली तो है, ताला नहीं मिल रहा है। हो सके तो दूसरा फेंक दो।"

○ ○
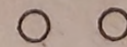
ज्ञान पास हो तो कभी न कभी काम आ ही जाता है।

और अज्ञान के हाथों में हो तब भी काम आ जाता है।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने शिष्यों को बड़े उत्साह से बता रहा था कि किस प्रकार बचपन में सीखी प्राथमिक चिकित्सा आखिर काम आ ही गई। वह बोला : "आश्चर्य तो इस बात का है कि इतना अरसा बीत जाने के बाद भी मुझे वह सब याद रह गया।"

हुआ यह कि जब मैं एक बार राजधानी की भीड़-भरी सड़क को पार कर रहा था तो बड़े जोर से किसी के टकराने की आवाज आई। घूम कर देखता क्या हूं कि एक बूढ़ा बेचारा बस से टकरा कर कुचल गया है। उसके पैर की हड्डी चकनाचूर हो गई थी, सिर फूट गया था और रक्त की फुहार छूट रही थी। फौरन बिजली की भांति मेरा प्राथमिक चिकित्सा ज्ञान मेरे मस्तिष्क में कौंध गया।

"मैं तुरन्त वहीं नीचे झुका और अपना सिर घुटनों के बीच छिपा लिया और इस प्रकार बेहोश होने से अपने को बचा लिया। इसी-लिए कहता हूं बच्चो, ज्ञान बड़े काम की चीज है।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन ने डट कर खाना खाया था। और जब आधी रात गये वह घर वापिस लौटने लगा तो अंधेरी रात को देखकर मेजबान ने उसे रास्ते के लिए अपनी टार्च दे दी।

एक घंटे बाद द्वार पर खट-खट सुन कर मेजबान नींद से उठा और द्वार खोला तो मुल्ला को खड़े पाया। "आपकी टार्च लौटाने चला आया था," बोला नसरुद्दीन, "इसने मुझे घर तक पहुंचने में बड़ी सहायता की। धन्यवाद।"

क्या यह सुनकर आपको स्वयं के संबंध में कुछ पता चलता है?

दूसरे के संबंध में कुछ पता चले तो वह व्यर्थ तो है ही साथ ही समझना कि आप समझे भी नहीं।

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन रेल में सफर कर रहा था। उस डिब्बे में एक सज्जन और थे। मुल्ला को चुप देखकर बातचीत छेड़ने के इरादे से उन्होंने कहा : "भाई साहब, आपका रुमाल नीचे गिर गया है।" इस पर मुल्ला ने कहा : "मेरा रुमाल नीचे गिर गया है, इससे आपको मतलब? आपका कोट जब सिगरेट से जलता रहा था, तब मैं तो कुछ नहीं बोला।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा अपनी पत्नी से : "देखो, मकान मालिक किराये के लिए बाहर दरवाजा खटखटा रहा है। उससे कह दो कि मैं घर पर नहीं हूं।"

"लेकिन, मुल्ला," पत्नी बोली, "तुम तो कभी झूठ नहीं बोलते हो ना ?"

नसरुद्दीन ने बोला : "इसीलिए तो तुम्हें भेज रहा हूं।"

○ ○
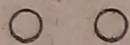
मुल्ला नसरुद्दीन ने शराब डटकर पी ली थी। लेकिन अभी होश नहीं खोया था। आधी रात बीत गई थी और वह अपने द्वार बंद कर ही रहा था कि एक मरीज आ गया।

मरीज को लिटाकर उसने उसकी नब्ज अपने हाथ में ले ली और बोला : "गिनती गिनना शुरू करो।" फिर मुल्ला को पता नहीं रहा कि कब उसका सिर मरीज की छाती पर टिक गया और वह गहरी नींद में खो गया। जब वह उठा तो उसे लगा कि बस पल भर को उसकी झपकी लग गई थी, लेकिन रोगी गिन रहा था : "५१६३४५६७७, ५१६३४५६७८, ५१६३४५६७९..."

○ ○
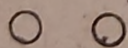
मुल्ला नसरुद्दीन अदालत में गवाही देने वाला था।

जज ने उससे पूछा: "नसरुद्दीन, जानते हो शपथ लेने के माने क्या हैं ?"

"जी हां" मुल्ला बोला, "इसके मानी कि अगर मैं झूठ बोलूं तो उस पर डटा रहूं, चाहे कुछ क्यों न हो जाये।"

○ ○
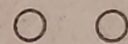
मुल्ला नसरुद्दीन के लड़के के पैर में चोट आ गई। मुल्ला ने पुलटिस बनाई। पहले लड़के की मां ने कोशिश की। मगर लड़का जरा बिगड़ैल था। गरम-गरम लगाने ही नहीं देता था। तब मुल्ला आया। उसने लड़के को झिड़की दी कि अगर पूरी तरह सिकाई हो जाने से पहले बोला तो मार पड़ेगी। फिर मुल्ला ने पुलटिस रखना शुरू कर दिया।

सिकाई के दौरान में लड़के ने कई बार बोलने की कोशिश की, मगर नसरुद्दीन ने उसे डांट कर फौरन खामोश कर दिया। जब भरपूर सिकाई हो चुकी, तब उसे बोलने की इजाजत मिली। लड़का बोला : "लेकिन पिताजी, आपने दूसरे पैर पर पुलटिस लगाई है।"

○ ○
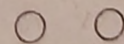
मुल्ला नसरुद्दीन के गांव में एक ऐसा आदमी तमाशा दिखाने आया जिसे छुरियां फेंकने में कमाल हासिल था। उसने लकड़ी का एक बड़ा तख्ता खड़ा किया और उससे सटाकर अपनी नवयुवती पत्नी को खड़ा कर दिया। फिर कुछ फासले पर खड़े होकर उसने जल्दी-जल्दी तेज धारवाली छुरियां फेंकनी शुरू कीं। वे उसकी पत्नी के बिलकुल नजदीक तख्ते में घुस जाती थीं। कभी-कभी तो वह बाल-बाल बच जाती थी। लेकिन वह चमचमाती छुरियों से घिरी शांत खड़ी थी।

यह तमाशा देखने पूरा गांव ही इकट्ठा हो गया था। और लोग सांस साधे आश्चर्यचकित खड़े थे।

लेकिन यह सब देखकर मुल्ला का जी घुट रहा था। एक और छुरी को भी इसी तरह उस नवयुवती को न लगते देखकर वह झुंझलाकर अपनी पत्नी से बोला : "चलो घर। इसमें क्या रखा है ! कमबख्त फिर चूक गया।"

○ ○

सरकार ने ट्राम का भाड़ दो आने से छह पैसे कर दिया था। इसके भी विरोध में एक सभा हुई। सभा की अध्यक्षता के लिए सिवाय मुल्ला नसरुद्दीन के कोई और राजी न हुआ। मुल्ला ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा : "यह पैदल चलनेवालों की आर्थिक व्यवस्था पर भारी आक्रमण है। क्योंकि पहले हम चलकर दो आने बचा सकते थे और अब केवल डेढ़ आना ही बचा सकते हैं।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन अपनी बैठक की दीवार से कान लगाये कुछ सुन रहा था। इतने ही में अचानक उसकी पत्नी आ गई।

उसने पूछा : "दीवार से कान लगाये क्या सुन रहे हो ?"

मुल्ला बोला : "तुम खुद ही सुन कर देख लो न ! तुम्हें भी मालूम पड़ जायेगा।"

पत्नी बड़ी देर तक कान लगाकर सुनती रही, फिर बोली : "मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा है।"

नसरुद्दीन बोला : "तुमने अभी सुना ही कितनी देर है। मैं तो पिछले तीन महीने से सुन रहा हूं। पर अभी तक एक शब्द भी सुनाई दिया हो तो कसम है।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन ने शराब के खिलाफ एक बड़ी पुरजोर किताब लिखी। उसे पढ़कर सैंकड़ों लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया। लेकिन एक दिन एक पिये हुए आदमी को बड़ी दुर्दशा में एक गटर से निकाला गया। उपचार से वह होश में आया। लोगों ने उसे बड़े प्रेम से समझाया कि भाई, मुल्ला नसरुद्दीन द्वारा लिखित शराब-विरोधी किताब पढ़ लो तो फिर तुम इस जहर को कभी न पियोगे।

उस आदमी ने अपने कोट के खीसे में से वह किताब निकालकर उन लोगों को दिखाई तो उन लोगों ने कहा : "क्या इसे पढ़कर भी तुमने शराब पीना नहीं छोड़ा है ?" उस आदमी ने कहा : "नहीं भाई, क्योंकि मैं स्वयं मुल्ला नसरुद्दीन हूं।"

○ ○
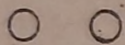
मुल्ला नसरुद्दीन ने बहुत बचना चाहा, लेकिन लोग माने ही नहीं। और उसे शराब के खिलाफ बोलने को खड़ा होना पड़ा। वह बोला : "शराब देश का कलंक है। शराब पीकर आप अपनी बीवी से झगड़ते हैं। पड़ोसियों से लड़ते हैं। इसी के कारण आप अपने मकान-मालिक पर गोली चलाते हैं, और इसी के कारण निशाना भी चूक जाते हैं।"

○ ○
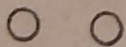
मुल्ला नसरुद्दीन के पास एक भैंस थी। उस भैंस के सींग बड़े घुमावदार और सुन्दर थे। उन सुन्दर सींगों को देखकर मुल्ला सोचा करता था कि यदि मैं इनके बीच में बैठ जाऊं और भैंस नगर में घुमे तो कैसा हो ? वर्षों-वर्षों तक यह विचार मुल्ला का पीछा करता रहा था और फिर एक दिन उसे स्वयं को रोकना मुश्किल हो गया।

सींगों के बीच में बैठते ही भैंस फुनफुनाती हुई चौकड़ी भरती हुई भागने लगी। मुल्ला की हालत देखने लायक थी। बड़ी मुश्किल से ही भैंस को रोका जा सका और मुल्ला की जान बची। लोगों ने पूछा : "नसरुद्दीन, ऐसा करने के पहले तुम्हें कुछ सोचना चाहिए था ?"

"आप ऐसा कहते हैं कि मैंने सोचा नहीं," मुल्ला नाराजगी से बोला : "अनेक वर्षों तक गंभीरता से सोचते रहने के बाद ही मैंने यह कार्य किया है।"

○ ○
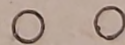
मुल्ला नसरुद्दीद का एक परदेशी मित्र उससे मिलने आया था। लेकिन मुल्ला की पत्नी बीच-बीच में बोलकर उसे मुल्ला से बात ही नहीं करने दे रही थी तो उसने पूछा : "मुल्ला यह लबार औरत कौन है ?"

"यह श्रीमती मुल्ला नसरुद्दीन हैं," मुल्ला ने कहा।

वह मित्र पछताया और बोला : "माफ कीजियेगा। मेरी बड़ी भूल हुई।"

"नहीं, नहीं, आपकी क्या भूल ?" नसरुद्दीन बोला : "भूल तो मेरी हुई है।"

○ ○

एक आदमी भयंकर शराबी था। और इधर उसे एक कठिनाई होने लगी थी कि शराब पीने के बाद उसे एक चीज की दो दिखती थीं। वह मुल्ला नसरुद्दीन के पास गया। मुल्ला को उसने अपनी तकलीफ बताई। मुल्ला ने उसे सांत्वना देते हुए कहा : "फिक्र की कोई बात नहीं है। यह कोई लाइलाज मर्ज नहीं है लेकिन क्या तुम चारों को एक ही रोग है ?"

○ ○
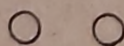
मुल्ला नसरुद्दीन एक चुनाव-आन्दोलन सभा में भाषण दे रहा था। उसने कहा : "इस बार हमारे दल को ही अपना वोट दीजिये। हमारा विरोधी दल आपको काफी धोखा दे चुका है। अब एक अवसर हमें भी दीजिये। और हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम उनसे पीछे रहने वाले नहीं हैं।

○ ○
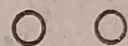
मुल्ला नसरुद्दीन से किसी ने पूछा : "नसरुद्दीन दस मिनिट के भाषण के लिए तुम्हें कितनी तैयारी करनी पड़ती है ?"

"दो हफ्ते।"

"और एक घन्टा बोलना हो तो ?"

"तो एक हफ्ता।"

"और अगर दो घण्टे बोलना हो ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "चलो अभी तैयार हूं।"

○ ○
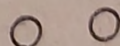
एक कवि सख्त बीमारी से उठा। मुल्ला नसरुद्दीन ने ताकीद की : "तीन महीने तक आप हर्गिज कोई दिमागी काम न करें।"

कवि ने पूछा : "मुल्ला, कुछ कविता करूं तो कुछ आपत्ति है ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "नहीं, कविता चाहे जितनी कर सकते हैं। दिमागी काम हर्गिज नहीं करना है।"

○ ○
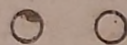
मुल्ला नसरुद्दीन एक पक्के गवैये को गाते देखकर जार-जार रोने लगा। पास बैठे एक सज्जन ने पूछा : "मुल्ला आप पर तो इस गाने का बड़ा असर पड़ा। आप इस रोग को खूब समझते मालूम होते हैं।"

नसरुद्दीन बोला : "राग को नहीं, रोग को समझता हूं। और समझूंगा कैसे नहीं। पार साल मेरा बकरा भी इसी तरह बिलबिला-बिलबिला कर मर गया था। अब जब किसी को भी यों राग अलापते देखता हूं तो रंज से सिर धुनने लगता हूं।"

○ ○
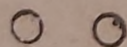
प्रत्येक व्यक्ति स्वयं तो होश में ही है।
दूसरे ही सदा बेहोश हैं।
प्रत्येक स्वयं तो ठीक ही है।
दूसरे ही गैर-ठीक हैं और गलत हैं।
इस भ्रांत लेकिन सार्वभौम तर्क के कारण ही पृथ्वी नर्क है।

एक पार्क की बेंच पर तीन आदमी बैठे थे। बीच में बैठा था : मुल्ला नसरुद्दीन। मुल्ला बिलकुल शांत था, मानो सो रहा हो। लेकिन उसकी दोनों बाजुओं पर जो थे, वे मछली पकड़ने की हरकतें कर रहे थे। वे बड़ी गम्भीरता से अपनी डोर लटकाते, उसे झटका देते और फिर वंशी की चर्खी पर लपेटने लगते।

यह व्यापार बड़ी देर से चलता था।

फिर एक पुलिस का सिपाही उधर आ निकला।

उसने शांत, सोते मुल्ला से ही बात करनी उचित समझी। मुल्ला को जगाकर उसने कहा : "नसरुद्दीन क्या ये दोनों पिनकी तुम्हारे दोस्त हैं ?"

"हां दीवान जी !" नसरुद्दीन ने कहा, "और दोनों गहरी छान गये हैं। देखते नहीं कि जहां मछलियां हैं ही नहीं, वहां मछलियां पकड़ रहे हैं।"

"तो इन्हें यहां से ले जाओ।"

"अभी लो, दीवान जी !" नसरुद्दीन ने कहा !

और ऐसा कहकर उसने नाव खेनी शुरू कर दी।

○ ○
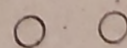
मुल्ला नसरुद्दीन : "क्या कहा महमूद, मकान मालिक किराये के पैसे लेने आया ? पागल, तूने कह नहीं दिया कि मुल्ला नसरुद्दीन घर पर नहीं है ?"

महमूद : "कहा मुल्ला, मगर वह मेरा विश्वास नहीं करता है।"

नसरुद्दीन : खैर, तब तो मुझे खुद ही जाकर कहना पड़ेगा। मेरे बिना कहे वह कम्बख्त मानने वाला नहीं है।"

○ ○
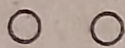
"मुल्ला ! एक गिलास बियर आये तो कैसा ?" पूछा एक दोस्त ने। जो वर्षों बाद मुल्ला नसरुद्दीन को अचानक ही राजधानी के एक होटेल में मिल गया था।

"नहीं भाई, शुक्रिया !" नसरुद्दीन बोला : "एक तो मेरे धर्म में शराब पीने की मनाही है, दूसरे शराब न पीने की मैंने कसम ले ली है। और तीसरे मैं अभी-अभी एक मित्र के घर से पीकर चला आ रहा हूं।"

○ ○
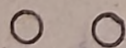
"माफ कीजिये" पूछा मुल्ला नसरुद्दीन ने, "क्या आप ही वह सज्जन हैं जिन्होंने कल मेरे लड़के को नदी में डूबने से बचाया था ?"

"जी हां। लेकिन यह तो मेरा फर्ज था, आप उस बात को भूल जाइये।"

मुल्ला ने तेजी से कहा, "भूल जाइये ! मैं पूछता हूं उसकी टोपी कहां है ?"

○ ○

धनी मरीज ने परेशानी के स्वर में मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा : "सच-सच बताइये, क्या मैं अच्छा हो जाऊंगा ? मैंने सुना है कि चिकित्सक अक्सर रोग का गलत अनुमान लगा लेते हैं। इलाज निमोनिया का करते हैं और जब रोगी की मृत्यु हो जाती है तो पता चलता है कि उसे टाइफाइड बुखार था।"

"क्या बकवास करते हैं आप ?" मुल्ला क्रोधित होकर बोला, "जब मैं किसी रोगी का निमोनिया का इलाज करता हूं तो उसकी मृत्यु सदा निमोनिया से ही होती है।"

○ ○
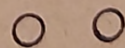
क्रोध का भी क्षण है। यदि थोड़ा सा भी धैर्य हो, तो क्षमा मांगने की आवश्यकता ही न पड़े।

मुल्ला नसरुद्दीन अदालत में पिस्तौल का लायसेंस लेने पहुंचा था। लेकिन वहां एक घंटे खड़े रहने पर भी लायसेंस मिलने का कोई आसरा दिखाई नहीं दिया, वह तो बड़बड़ाता हुआ लौट गया : "बड़ी देर हुई जा रही है और क्रोध भी उतरा जा रहा है। मेरे ख्याल में अब मुझे साग काटने की छुरी से ही काम चला लेना उचित है।"

○ ○
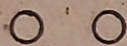
मुल्ला नसरुद्दीन : "कहिए, आपको क्या तकलीफ है ?"

रोगी : "मुल्ला, मेरी कमर में कभी-कभी अचानक दर्द होने लगता है।"

नसरुद्दीन : "अच्छा, तो आपको मैं यह गोलियां दे देता हूं। दर्द शुरू होने के ठीक बीस मिनट पहले गोली खा लेना।"

○ ○
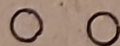
पुलिस कांस्टेबिल : "नसरुद्दीन, मेरा ख्याल है कि मैंने तुम्हारी स्त्री को तलाश कर लिया है।"

मुल्ला नसरुद्दीन : "सचमुच ! क्या वह तुमसे कुछ कहती थी ?"

कांस्टेबिल : "कुछ नहीं, उसने जबान तक नहीं हिलाई है।"

नसरुद्दीन : "जबान तक नहीं हिलाई ? तो वह मेरी स्त्री तो कदापि नहीं हो सकती ! और वैसे उसके स्त्री होने में भी मुझे संदेह है।"

○ ○
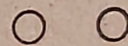
मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी ने मुल्ला को समझाया : "देखो, एक बात याद रखो—बार-बार अपने मन में दोहराते रहो कि मैं शराब पीना ही नहीं चाहता हूं।"

"इससे कुछ भी नहीं होता," नसरुद्दीन बोला, "क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कितना झूठा हूं।"

○ ○
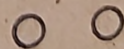
मुल्ला नसरुद्दीन बड़ा गीता-पाठी था। उसके एक मित्र ने पूछा : "मुल्ला, न तो तुम हिंदू ही हो और न ही धार्मिक, फिर तुम्हें गीता से क्या प्राप्ति होती है ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "मुझे गीता के उन श्लोकों से बड़ी प्रेरणा मिलती है, जिनमें कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया है कि तुम्हें तो कौरवों की मृत्यु के लिए केवल निमित्त मात्र बनना है। मृत्यु तो इनकी पहले ही मेरे हाथों तय हो चुकी है। किसी मरीज को दवाई देते समय मुझे भी कृष्ण का यह वचन सदैव याद रहता है : "निमित्त मात्रं भव।"

○ ○
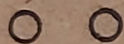
बहुत देर से वह मुल्ला नसरुद्दीन को अपने पति की बीमारी के सम्बन्ध में बता रही थी : "मुझे डर है मुल्ला, कि उनके दिमाग में कुछ गड़बड़ हो गई है। मैं घंटों तक उनसे बातें करती रहती हूं और फिर देखती हूं कि उनके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा है।"

"यह कोई बीमारी नहीं है," ऊबा हुआ मुल्ला बोला, "बल्कि यह तो भगवान् की देन है।"

○ ○

मुल्ला नसरुद्दीन पर अपनी पत्नी को कत्ल करने का मुकदमा चल रहा था। उससे पूछा गया कि वह क्या सफाई पेश कर सकता है, तो उसने कहा : "सरकार, केवल यही कि वह मेरे साथ ५१ वर्ष तक रही और मैंने पहले ऐसा कभी नहीं किया।"

○ ○
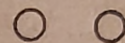
सत्य ही कहना है तो मौन सहज ही घटित होने लगता है।

मुल्ला नसरुद्दीन जब जज के सामने खड़ा हुआ तो उसे शपथ दिलाई गई। मुल्ला को कहना पड़ा : "मैं भगवान् को हाजिर-नाजिर जानकर कहता हूं कि जो कहूंगा सच-सच कहूंगा। और सच के अलावा कुछ भी नहीं कहूंगा।"

मुल्ला ने शपथ ले तो ली पर बड़ी हिचक के साथ।

जज ने पूछा : "अब बताओ, नसरुद्दीन, तुम अपने बचाव में क्या कहना चाहते हो ?"

नसरुद्दीन बोला : "इतनी बंदिशें लगने के बाद मेरे पास कहने को कुछ भी नहीं रह जाता है।"

○ ○
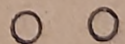
मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने मनोविश्लेषक को जान से मार डाला था। मारते समय उसके शब्द ये थे : "मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे अच्छा कर दिया। लेकिन मुझे खेद है कि आप मेरे बारे में जरूरत से ज्यादा जान गये हैं।"

○ ○
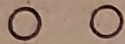
मुल्ला नसरुद्दीन से विरोधी वकील जिरह कर रहा था, जिसमें एक मृत व्यक्ति का जिक्र आ गया। वकील ने मुल्ला से मृत व्यक्ति के चरित्र के संबंध में प्रश्न किया। मुल्ला बयान करने लगा: "वह व्यक्ति निष्कलंक था'। उससे मिलने वाले उसे चाहते थे और आदर की दृष्टि से देखते थे। उसके विचार और कार्य पवित्र थे......"

लेकिन न्यायाधीश ने मुल्ला को बीच में ही टोक कर पूछा, "नसरुद्दीन, तुम्हें यह सब कैसे ज्ञात हुआ ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "यह सब उसकी समाधि पर लिखा हुआ है।"

काश ! जो हम समाधियों पर लिखते हैं वह जीवन में भी होता, लेकिन अभी तो हम वही समाधियों पर लिखते हैं जोकि जीवन में नहीं है।

○ ○
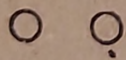
मुल्ला नसरुद्दीन इतना झूठ बोल रहा था कि न्यायाधीश को उसे बीच में ही टोकना पड़ा : "देखो नसरुद्दीन, तुम्हें अदालत में सच बोलना चाहिए। तुम्हें पता है कि तुम झूठ बोलते रहे तो तुम्हें क्या सजा मिलेगी ?"

"मेरा ख्याल है मैं नरक में जाऊंगा," मुल्ला ने जवाब दिया।

"यह तो ठीक है," न्यायाधीश ने कहा, "लेकिन और क्या होगा ?"

मुल्ला नसरुद्दीन कुछ देर सोचता रहा और फिर बोला "क्या नरक काफी नहीं है ?"

○ ○
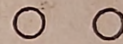
मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी फातिमा की मृत्यु पर उसकी बचपन की सहेली मुमताज विधुर के प्रति सहानुभूति प्रकट करने आई थी।

"फातिमा और मैं बचपन की सहेली थीं," मुमताज ने बिसूरते हुए कहा, "मुल्ला, अब आप कोई ऐसी चीज दीजिये जिससे मैं उसे सदा याद रख सकूं।"

आंसू झरते नेत्र ऊपर उठाकर नसरुद्दीन ने कहा : "क्या मेरे से काम चल जायेगा ?"

○ ○
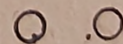
मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी की मृत्यु पर सबसे अधिक गम करने वाले दो थे—एक मुल्ला नसरुद्दीन स्वयं, जो अब शांत और गंभीर दिखता था और एक उसका तथाकथित मित्र अफजल हुसैन, जो कि बड़ा ही दुखी और व्याकुल हो रहा था।

आखिर मुल्ला से नहीं रहा गया। वह मित्र का कंधा थपथपा कर सान्त्वना देता हुआ बोला : "भई, इतना न घबराओ। हो सकता है मैं शीघ्र ही दूसरी शादी कर लूं।

○ ○

"नसरुद्दीन, क्या तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की राय कभी एक भी हुई है ?" जज ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा।

"हां, केवल एक बार," कहा नसरुद्दीन ने : "जब हमारे घर में आग लगी थी तब हम दोनों ने ही एक साथ आगे के दरवाजे से निकलने की सोची थी।"

○ ○
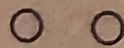
मुल्ला नसरुद्दीन को फांसी लगने के ठीक पहले भीड़ में से एक आदमी ने पूछा : "नसरुद्दीन, क्या तुम्हें अपने भविष्य की जानकारी नहीं थी ? क्योंकि मैंने सुना है कि तुम ज्योतिष के भी ज्ञाता हो ?"

नसरुद्दीन ने कहा : "थी। जानकारी निश्चित थी। ग्रहों के अनुसार मृत्यु के समय मुझे कोई उच्च स्थान प्राप्त होना ही था। और फांसी के तख्ते से ऊँचा स्थान और क्या हो सकता है।"

○ ○
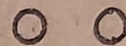
मुल्ला नसरुद्दीन ज्योतिषी को अपना हाथ दिखा रहा था। ज्योतिषी ने बड़े दुख में सिर हिलाया और कहा, "मुझे यह कहते हुए बड़ा शोक होता है कि आप शीघ्र ही विधुर हो जायेंगे। फिर आपकी पत्नी का अंत भी अस्वाभाविक होगा।"

नसरुद्दीन ने अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक पूछा : "मैं छूट तो पाऊंगा न ?"

○ ○
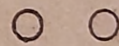
गर्भ में मां के किसी कार्य का बच्चे पर कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं इस बात पर गोष्ठी हो रही थी काफी हाउस चर्चा से गर्म हो उठा था। बड़ा विवाद तेजी पर था और तभी मुल्ला नसरुद्दीन ने जोर देकर कहा : "यह सब बक्वास है। मेरी मां ने मुझे गर्भ में लिए दो तीन ग्रामोफोन रिकार्ड बजा-बजाकर घिस डाले थे। लेकिन इससे मुझे कुछ···इससे मुझे कुछ···इससे मुझे कुछ······"

○ ○
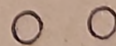
मुल्ला नसरुद्दीन की फांसी का दिन आ गया। फांसी सरेआम ही दी जाती थी। और फांसी देने के पहले सजायाफ़्ता को भीड़ के सामने बोलने दिया जाता था।

फांसी लगने के ठीक पहले कुछ व्यक्ति मुल्ला से मिलने आये। उनमें और मुल्ला में बड़ी देर तक किसी संबंध में मोल-तोल चलता रहा। बहुत गरमी-गरमी के बाद मुल्ला ने उन लोगों से कुछ लेकर अपनी जेब में रख लिया और उसके बाद वह अत्यंत संतुष्ट और प्रसन्न दिखाई पड़ता था।

फांसी दिये जाने के पहले न्यायाधीश ने नसरुद्दीन से पूछा कि क्या वह एकत्रित लोगों से कुछ कहना चाहता है। नसरुद्दीन ने कहा : "हां।" और वह तख्ते पर चढ़कर बोलने लगा : "लोगों ! जाने के पहले मैं तुमसे एक बात कह जाना चाहता हूं। उसे याद रखना। और वह यह है कि जूता छाप साबुन दुनिया में सबसे अच्छा है।"

मुल्ला नसरुद्दीन की लाश जब फांसी के तख्ते उतारी गई तो उसकी जेब से चांदी का एक रुपया भी आवाज करता हुआ नीचे गिर पड़ा था।

ENGLISH BOOKS OF BHAGWAN SHRI RAJNEESH

Translated from Original Hindi version
Price in India (Postage extra)

1.	Path to Self-Realization	5.00
2.	Seeds of Revolution	8.00
3.	Earthen Lamps	4.50
4.	Wings of Love and Random Thoughts	3.50
5.	Towards the Unknown	1.50
6.	The Mysteries of Lie and Death	4.00
7.	Lead Kindly Light	1.50
II. Original English Books :		
8.	Beyond and Beyond	2.00
9.	Flight of the Alone to the Alone	2.50
10.	LSD : A Shortcut to False Samadhi	2.00
11.	Yoga : A Spontaneous Happening	2.00
12.	The Vital Balance	2.00
13.	The Gateless Gate	1.50
14.	The Silent Music	2.00
15.	Turning In	2.00
16.	Silence Explosion	12.00
17.	What is Meditation ?	3.00
18.	The Dimensionless Dimension	2.00
19.	Wisdom of Folly	6.00
20.	The Inward Revolution	15.00
21.	I Am the Gate	10.00
22.	Secrets of Discipleship	3.00
23.	Dynamics of Meditation	15.00
24.	Thy will be done : Rati Sheth	2.00
III. Critical Studies on Bhagwan Shree Rajneesh		
25.	Acharya Rajneesh : a Glimpse	1.25
26.	Acharya Rajneesh : The Mystic of Feeling	20.00
27.	Lifting the Veil	10.00

Can be had from
HINDI BOOK CENTRE, ASAF ALI ROAD, NEW DELHI-1

अच्छी पुस्तकें
अभिलाषा
उर्वशी
तलखियाँ
याद रही बातें
बस्तियाँ
लाडली
तूफान
कलंक
दीन दुनिया
चाकर गाथा
स्टार बुक्स